नरोड़ा आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज (हिंदी विभाग)

बी.ए.सेम-3

पेपर-Ele-2 Hindi-201

सामान्य हिंदी

वर्ष-2022-2025

प्रस्तुतकर्ताः- डॉ.जशाभाई पटेल

नाम-

रोल नंबर-

डॉ.जशाभाई पटेल

श्रीलाल शुक्ल : एक परिचय

श्रीलाल शुक्ल हिन्दी कथा-साहित्य तथा व्यंग्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। प्रशासन से हिन्दी साहित्य-सृजन के क्षेत्र में आये श्रीलाल का जन्म उत्तर प्रदेश के जिला लखनऊ के एक छोटे से गाँव अतरौली में 31 दिसम्बर, 1925 को हुआ। उस समय उनके परिवार की आर्थिक स्थिति कुछ ठीक न थी। पितामह पं० गदाधर प्रसाद शुक्ल संस्कृत, हिन्दी, उर्दू व फारसी के प्रकाण्ड विद्वान तथा संगीत प्रेमी थे। पिता पं० ब्रजकिशोर शुक्ल हिन्दी, उर्दू एवं संस्कृत का व्यावहारिक ज्ञान रखते थे तथा कसरत और संगीत का उन्हें शौक था। अपने पिता के विषय में शुक्लजी ने स्वयं लिखा है कि "मेरे पिता को निर्धनता, सदाचार और साहित्य तथा संगीत का संस्कार विरासत में मिला वह गरीब थे, पर उनके संस्कार गरीब के न थे।" पिता के इन संस्कारों और रुचियों का प्रभाव शुक्लजी पर प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूप में पड़ा। पिता को साहित्य में रुचि थी इसलिए अपने पुत्र को संस्कृत श्लोकों तथा हिन्दी कविताओं का बचपन में ही मुक्तदान दिया। इसके फलस्वरूप हाईस्कूल तक आते-आते जब श्रीलाल शुक्ल ने संस्कृत बोलने का ने अभ्यास प्रारम्भ किया, तो व्याकरण में भले ही कमजोरी अनुभव हुई हो, पर अभिव्यक्ति की कमजोरी कभी अनुभव न हुई। पिताजी जीवन के पूर्वार्द्ध में अपने पिता पर, बाद में कृषि और अपने भाग्य पर तथा जीवन के अंतिम दिनों में बड़े पुत्र पर निर्भर रहते हुए सन् 1945 में दिवंगत हुए। माँ सदाचारी, सुशिक्षित एवं सद्गुणों से सम्पन्न थीं। गाँव में रहते हुए, अनेक समस्याओं एवं कठिनाइयों का सामना करते हुए, साधनहीन होने पर भी उन्होंने गणित और हिन्दी की सामान्य जानकारी प्राप्त कर ली थी। शुक्लजी के शब्दों में "मेरी माँ को पढ़ने लिखने का मौका मिल गया था और उन्होंने हिन्दी तथा गणित की सामान्य जानकारी प्राप्त कर ली थी।" शुक्लजी की माँ जिज्ञासु प्रकृति की महिला थीं। वे टी० वी० आने के बाद क्रिकेट, बैटमिंटन और सिनेमा बहुत ही रुचि के साथ तन्मय होकर देखती थीं। 1960 में काल के क्रूर हाथों ने श्रीलाल शुक्ल के सिर से माँ की ममतामयी छाया को सदैव के लिए छीन लिया।

दो भाइयों तथा दो बहिनों के बीच श्रीलाल शुक्ल का बाल्यकाल बीता। आपके बड़े भाई पं० शीतला सहाय शुक्ल ने भयंकर आर्थिक स्थिति का सामना करते हुए हाईस्कूल तक की शिक्षा ग्रहण की। कु शाग्रबुद्धि होते हुए भी, पारिवारिक अवस्था को देखते हुए उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी तथा उन्हें धनोपार्जन हेतु गांव को छोड़कर कानपुर जाकर नौकरी करनी पड़ी। श्रीलाल शुक्ल की प्रारंभिक शिक्षा पास के कस्बे मोहनलाल गंज में हुई। आपको बचपन से ही सुसस्कृत वातावरण प्राप्त हुआ। जिसका असर आपकी रग-रग में समा गया। आपका बचपन से ही साहित्य के प्रति विशेष लगाव था। इस प्रकार रचनात्मक व्यक्तित्व के विकास एवं में माता-पिता एवं चाचा का अभूतपूर्व योगदान रहा। रिश्ते में एक चाचाजी थे जिनका नाम पं० चन्द्रमौलि शुक्ल था। वे परिश्रमी, कुशाग्रबुद्धि तथा आर्थिक साहित्यिक रुचि सम्पन्न एक शिक्षक थे। संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फारसी तथा अंग्रेजी के वे भाषाविद् थे। उन्होंने हिन्दी में विविध विषयक अनेक पुस्तकें लिखी। जब वे ग्रीष्मावकाश में गाँव आते तो साथ में अनेक सारी पुस्तकें ले आते थे। साहित्य-जगत से श्रीलाल शुक्लजी का परिचय इन्हीं पुस्तकों के माध्यम से हुआ। इस बारे में शुक्लजी स्वयं लिखते हैं- "पर

उनकी (चाचाकी) सम्पन्नता में मेरे मतलब की चीज सिर्फ उनकी किताबें और पत्रिकाएँ थीं। यह हमारे लिए 'चाँद', 'माधुरी', 'सुधा', 'सरस्वती', 'गंगा', 'हँस', 'सुकवि', 'काव्य कलाधर आदि पढ़ने का मौका था। मैंने प्रेमचन्द और प्रसाद की कई पुस्तकें, जो उन्हें सादर भेंट की गयी थीं, आठवीं पास करने के पहले ही पढ़ी थीं, उन साहित्यकारों के हस्ताक्षरों को बार-बार गौर से देखा था। नागरी प्रचारिणी सभा और गंगा-पुस्तकमाला आदि के नवीनतम प्रकाशन मैंने 1939-40 तक पढ़ लिये। उनमें वृंदावनलाल वर्मा और निराला की कृतियाँ भी थीं ।"

श्रीलाल शुक्ल के व्यक्तित्व में सृजनात्मकता के बीज बचपन से ही विद्यमान थे, जिन्हें गाँव के साहित्यिक माहौल में पनपने का अवसर मिला। वे हाईस्कूल तक पहुँचते-पहुँचते संस्कृत बोलना सीख गये थे। साथ ही शब्दों को कविता में ढालने का छिटपुट प्रयास भी प्रारम्भ कर दिया था। 14-15 वर्ष की अवस्था में उन्होंने धनाक्षरी-सवैये लिखने प्रारंभ कर दिये थे। इस अवस्था में अध्ययन के प्रति गहरी लगन थी। हर ओर से ज्ञान एकत्रित करने के लिए उनका मन सदैव उत्साहित रहता था। बालक श्रीलाल धीरे-धीरे कविता की रचनाकर काव्य-सम्मेलनों में भाग लेने लगे और कवियों के मध्य उदीयमान सूर्य की भाँति अपना प्रकाश फैलाने लगे। कवियों के मध्य एक स्थाई स्थान उन्होंने प्राप्त कर लिया। ये कविताएँ गाकर भी सुनाया करते थे। कभी-कभार गला खराब हो तो लम्बी कविता पढ़कर सुनाया करते थे। इन सम्मेलनों में जाने से उन्हें आर्थिक रूप से सहायता भी मिलती थी। उन्होंने खुद लिखा है....हाईस्कूल और इण्टर के दिनों में कवि सम्मेलनों से कभी-कभी महीने का खर्च चलाने लायक रुपया मिलने लगा।"' अतः कष्ट युक्त एवं अभावग्रस्त परिस्थितियों में भी शुक्लजी अध्ययन से विमुख न हुए, डटकर परिस्थितियों का सामना किया और आत्म-उन्नति के लिएसदैव रत रहे। जीवन में जो व्यक्ति परिस्थितियों का डटकर सामना करता है, उसे जीवन में सफलता अवश्य मिलती है। शुक्लजी के संदर्भ में मैथलीशरण गुप्त की ये पंक्तियाँ चरितार्थ होती दिखाई देती हैं। "कष्ट कन्टकों में हैं, जिनका जीवन- सुमन खिला। गौरव-गंध उन्हें उतना ही यत्र-तत्र सर्वत्र मिला।।"

श्रीलाल शुक्लजी ने मिडिल मोहनलाल गंज (लखनऊ) से, हाईस्कूल कान्यकुब्ज वोकेशनल कॉलेज (लखनऊ) से, इन्टरमीडिएट कान्यकुब्ज कॉलेज (कानपुर) से, तथा बी० ए० इलाहाबाद विश्वविद्यालय से किया गाँव से प्रारम्भ की गई शिक्षा की परिणति इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हुई। अब तक पद्य के प्रति उनका आकर्षण समाप्त हो गया था। उन्होंने अब कहानी लिखना प्रारंभ किया। इलाहाबाद में आने से उनका संपर्क केशवचन्द वर्मा, धर्मवीर भारती, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, गिरिधर गोपाल, जगदीश गुप्त जैसे उभरते साहित्यकारों के साथ हुआ। भाग्यहीन होने के कारण एम० ए० और कानून की पढ़ाई आगे छोड़नी पड़ी। कुछ समय तक उन्होंने कान्यकुब्ज वोकेशनल इन्टर कॉलेज, लखनऊ में अध्यापन कार्य भी किया। सन् 1948 में एक सभ्य, सुशील एवं रूपवती कन्या गिरजादेवी से उनका विवाह हुआ। उनका वैवाहिक जीवन सुखी था। उनका पूरा जीवन अपने परिवार को समर्पित हैं। 1991 में उनकी पत्नी गिरजाजी बीमार हुई। उनकी बीमारी लगातार छः वर्ष चली। छः वर्ष के इस लम्बे समय के दौरान श्रीलालजी ने जितने प्रेम और लगन से उनकी सेवा, देखरेख की, वैसे उदाहरण बहुत कम देखने को मिलते हैं।

श्रीलालजी की इस समर्पित सेवा के बावजूद वह चल बसी और 1997 की फरवरी में उनका देहावसान हो गया। गिरजाजी की मृत्यु का श्रीलालजी को गहरा सदमा लगा । वे बेहद टूट गये और और अकेले पड़ गये। उन्हें ऐसा लगा कि उनके व्यक्तित्व का एक हिस्सा टूटकर अलग हो गया है। धीरे-धीरे इस घटना से वह बाहर आये और लेखन की ओर मुड़े।

सन् 1949 में उत्तर प्रदेश सिविल सर्विस की परीक्षा उत्तीर्ण करके भारत सरकार की सेवा में कार्यरत हुए। कुछ वर्षों के बाद 1973 में आई० ए० एस० में उनकी पदोन्नति हुई। उत्तर प्रदेश के अनेक उच्च पदों पर कार्य करने के उपरांत वह विशेष सचिव, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के पद से 30 जून, 1983 को सेवामुक्त हुए। उनका पारिवारिक जीवन सुखी है। इस समय शुक्लजी लखनऊ में अपने स्थायी निवास में रहते हुए साहित्य-सेवा में अनवरत रूप से संलग्न हैं। उन्हें तीन पुत्रियाँ रेखा, मधूलिका, विनीता तथा एकपुत्र आशुतोष हैं। ये सभी सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। वे अधिकारी थे पर अधिकारी के तेवर उनमें नहीं थे। वे एकदम सरल और मृदुभाषी व्यक्ति थे। पद से मिलने वाले लाभों के वे कभी गुलाम नहीं रहे। गाड़ी सरकार की तरफ से मिली थी पर कभी उन्होंने उसका दुरुपयोग नहीं किया। वह मीलों पैदल चलते थे, धूप में घंटों तक खड़े रहते थे, पर कभी सेहत पर कोई असर नहीं हुआ। प्रशासन में उनका नाम था. धाक थी, साख थी। उसका कारण था परिश्रम, ईमानदारी, शीघ्र निर्णयशक्ति तथा प्रेक्टिकल एप्रोच अफसरी बू उनमें नहीं के बराबर है, अवकाश प्राप्ति के बाद तो एकदम नहीं। "श्रीलाल शुक्ल लेखक भी हैं और आदमी भी। उनमें सरलता है, सहजता है, उदारता है, बड़प्पन है, सादगी है, नम्रता है, निश्छलता है, विनय है, मधुरभाषिताहै। अपनी कमजोरियों का पूरा एहसास है। वे स्वाभिमानी है, पर उनका स्वाभिमान इतना लचीला नहीं कि उसमें अहं या रुक्षता समाहित हो जाय एक श्रीलाल शुक्ल प्रकांड पंडित है। लेकिन प्रदर्शन में वह कभी विश्वास नहीं करते। पढ़ने के शौक के कारण उन्होंने देशी-विदेशी साहित्य और न जाने क्या-क्या पढ़ रखा है। उनकी धारणाशक्ति अद्‌वितीय है। वे वैसे तो बहुत अच्छे वक्ता नहीं है पर समय आने पर हिन्दी-अंग्रेजी तो ठीक संस्कृत में भी भाषण करते है। वे बहुभाषाविद है और अवधी, हिन्दी, संस्कृत पर अनवरत बोल सकते हैं। वह जितनी भाषाएँ जानते हैं उन पर उनकी पकड़ लाजवाब है। वे मित्र बनाना भी अच्छी तरह जानते हैं। बीस वर्ष के युवक से लेकर अस्सी वर्षीय वृद्‌ध तक सबके प्रति समान आदरभाव रखते हैं। मित्रता के लिए उन्होंने क्या-क्या नहीं किया है। मित्रता के लिए उन्होंने जो कुर्बानियों दी हैं उसका इतिहास अगर लिखा जाय तो एक पूरा पोथा तैयार हो सकता है। आलोचकों के प्रति उनका रवैया कभी हिंसात्मक नहीं रहा है।

श्रीलालजी का नियमित साहित्य लेखन सन् 1953 से प्रारंभ हुआ। स्वयं उन्हीं के शब्दों में- "अगर किशोरावस्था में किये गये घपलों को न गिनें तो साहित्य में मेरे प्रयोग 27 वर्ष की अपेक्षाकृत परिपक्व आयु में शुरू हुए... एक दिन आकाशवाणी की रुमानी गिचिर-पिचिर से जो वहाँ के नाटकों और दूसरे प्रसारणों में लबालब भरी रहती थी, बौखलाकर और उसका लगभग ध्वंसात्मक विरोध करते हुए मैंने स्वर्णग्राम और वर्षा नामक निबन्ध लिख डाला और धर्मवीर भारती के पास भेज दिया। यह निबंध 'निकष' के पहले अंक में जो उस समय समकालीन लेखन का बहुत कुछ

प्रतिभा और उतनी ही मात्रा में स्नानबरी प्रदर्शित करने वाला अर्द्धवार्षिक प्रकाशन था- छपा। इसके बाद कई जगहों में भारती से पूछताछ होने लगी कि लेखक श्रीलाल शुक्ल कौन है?"

'स्वर्णग्राम और वर्षा' नामक निबंध से श्रीलाल शुक्ल की गद्य लेखन की मंदाकिनी स्वतः प्रवाहित हो उठी। इसके पश्चात् हास्य-व्यंग्य, निबंध, सामान्य लेख, कहानियों तथा उपन्यास अंश हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिकाएँ ज्ञानोदय, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, कल्पना, नई कहानियाँ, तुंगशृंग, माध्यम, सारिका आदि में प्रकाशित होने लगे। रचनाएँ प्रकाशित करवाने के लिए अन्य लेखकों कीतरह श्रीलाल शुक्ल को संघर्ष नहीं करना पड़ा। उन्हीं के शब्दों में- "लेखक की हैसियत से दुकान बैठालने में मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई। प्रकाशन के लिए मुझे कोई भी ऐसा संघर्ष नहीं झेलना पड़ा जिसकी मैं डींग हाँक सकूँ। साहित्य में मुझे सामान्यतया प्रोत्साहन और सद्भाव के साथ ग्रहण किया गया।"" अपने लेखन के प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए वह लिखते हैं- "लेखन मेरे लिए अपनी गहनतम संभावनाओं के अन्वेषण का माध्यम है. वह मेरे लिए मुक्ति की एक प्रक्रिया है। बंधे होने की जो छटपटाहट मेरे लेखन की प्रेरक शक्ति है, वही मेरी रोज़मर्रा की आदतों और सामाजिक प्रवृत्तियों का भी निरूपण करता है।""

श्रीलाल शुक्ल के पास व्यापक अनुभव हैं, पैनी दृष्टि हैं तथा सुन्दर कल्पना शक्ति हैं। ये तीनों का त्रिवेणी संगम उनके कथा-साहित्य में दिखायी देता है। श्रीलालजी का संबंध जितना शहर के साथ है उतना ही गाँव के साथ है। वह शहर का वर्णन कर रहे हो चाहे गाँव का, अभिव्यक्ति का संकट उनके सामने कभी नहीं आया। उनके भीतर शब्दों का झरना सदा बहता रहता है। उन्होंने कभी शब्दों को तोड़ा-मरोड़ा नहीं। सूक्ष्म दृष्टि के कारण वह छोटी-से-छोटी बात भी पकड़ लेते हैं, जिसकी ओर स्वतः हमारा ध्यान कभी नहीं जाता। वह अपने आसपास जो देखते हैं, जो अनुभव करते हैं उसे अपने साहित्य में सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की भाँति ले आते हैं। ममता कालिया ने इस संदर्भ में कहा है- "श्रीलालजी की सबसे बड़ी खासियत मेरे नजदीक यह है कि वे अपनी रचनाओं की कथा-भूमि अपने कार्यालय के कुरुक्षेत्र में ही ढूँढ़ निकालते हैं। रोजमर्रा के गैर-दिलचस्प कार्य-कलापों के मध्य ही उनका साहित्य प्रसव व पोषण पाता है। 'रागदरबारी' व 'मकान' दफ्तर के दैनिक दुष्कर्मों से जनित नौकरशाही के दबंग दस्तावेज़ हैं।"

उनकी लेखन प्रक्रिया अन्य लेखकों से एकदम अलग है। रचना-प्रक्रिया में न जाकर वे विषय-निरूपण में एकाग्रचित होते हैं। वे एकाग्रता के साथ लेखन कार्य करते हैं। कई बार एक ही चीज चार-चार, पाँच-पाँच बार वे लिखते हैं। 'रागदरबारी' जैसा महाकाव्यात्मक उपन्यास उन्हें छह-सात बार संशोधित करना पड़ा था तथा इसे लिखने में छह वर्ष लगे थे। श्रीलाल शुक्लजी स्वयं लिखते हैं 'रागदरबारी' ने मुझे लगभग छह साल बीमारी की हालत में रखा। उन गँवार चरित्रों के साथ दिन-रात रहते हुए मेरी जबान खराब हो गयी। भद्र महिलाएँ खाने की मेज पर कभी-कभी मुझे भौहें उठाकर देखने लगी, मैं परिवार से, परिवार मुझसे कतराने लगा। 'रागदरबारी से भी ज्यादा संशोधित किये गये उपन्यास हैं "मकान', 'सीमाएँ टूटती हैं' तथा 'बिस्रामपुर का सन्त ।

श्रीलाल शुक्ल ने साहित्य के क्षेत्र में नयी उपलब्धियाँ प्राप्त की। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक बंधनों, समाज में फैली कुरीतियाँ, समाज में चारों ओर व्याप्त भ्रष्टाचार तथा अन्याय

का सख्त विरोध करते हैं। समाज के टूटे हुए और टूटते मूल्यों की वह पुनः स्थापना करते हैं। प्रसिद्ध साहित्यकाररघुवीर सहाय ने लिखा है उनका व्यक्तित्व ग्राम- शोभा के वर्णन' (निकष) से यहाँ तक विकृति की सृष्टि नहीं, उसकी खोज करता रहा है; इस मामले में यह अपने समकालीन परसाई से काफी भिन्न हैं। जो कि टूटने योग्य है उसे तोड़ ही डालने के कायल है और शरदजोशी या रवीन्द्रनाथ त्यागी से तो बहुत ही भिन्न हैं जिन्होंने चुनी हुई चीज़ों पर हँसने-हँसाने में दक्षता अर्जित की है। श्रीलाल प्रेमचन्द और अज्ञेय के अधिक निकट पड़ते हैं जो टूटे मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयत्नशील हैं और बंकिम के तो वह बहुत ही निकट हैं क्योंकि वह भी बार-बार उसकी याद दिलाते हैं- जो टूट चुका है पर टूटकर नष्ट हो जाने के योग्य नहीं था ।

आज श्रीलाल शुक्ल हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में लब्ध प्रतिष्ठित श्रेष्ठ व्यंग्यकारों में एक हैं। उपन्यासकार की अपेक्षा व्यंग्यकार के रूप में उन्हें अधिक सफलता प्राप्त हुई है। प्रसिद्ध कथाकार कमलेश्वर ने हिन्दी व्यंग्य को गंभीर दृष्टि तथा नवीन अभिव्यंजना देने में श्रीलाल शुक्ल के योगदान को सराहा है।

इस प्रकार श्रीलाल शुक्ल एक ऐसे लेखक हैं जिन्होंने हिन्दी लेखन के मिजाज़ को बदला है। वे अपनी रचनाओं में हर बार कुछ नया-नया अपनाते रहे। उनके उपन्यासों को देखा जाए तो उनके हर नये उपन्यास ने पिछले उपन्यासो तक के पाठकों को अपनी नयी छवियों-भंगिमाओं के कारण चौकाया हैं। आज भी श्रीलाल शुक्ल की लेखनी सतत क्रियाशील है। आशा रखते हैं वे हिन्दी साहित्य-जगत् को ढेर सारी रचनाएँ प्रदान करें और हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि करें। अब तक उनकी निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं

उपन्यास- साहित्य

1. सूनी घाटी का सूरज
2. अज्ञातवास
3. रागदरबारी:
4. आदमी का जहर
5. सीमाएँ टूटती हैं:
6. मकान :
7. पहला पड़ाव
8. बिस्रामपुर का संत :
9. राग-विराग

व्यंग्य - साहित्य

1. अंगद का पाँव
2. यहाँ से वहाँ
3. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ

4. उमरावनगर में कुछ दिन
5. कुछ जमीन पर कुछ
6.हवा में आओ बैठ लें कुछ देर
7.अगली शताब्दी का शहर

कहानी साहित्य

1. यह घर मेरा नहीं :
2. सुरक्षा तथा अन्य कहानियाँ

आलोचना

अज्ञेय कुछ रंग, कुछ राग

निबंध

भगवती चरण वर्मा

अमृतलाल नागर

अनुवाद- श्रीलाल शुक्ल की कई कहानियाँ भारतीय भाषाओं में अनूदित हैं। रागदरबारी' का अंग्रेजी सहित सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। 'रागदरबारी' का पेंगुइन बुक्स इंडिया द्वारा अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुआ है। इसका अंग्रेजी अनुवाद जिलियन राइट ने किया है। 'पहला पड़ाव का भी पेंगुइन बुक्स इंडिया द्वारा अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुआ है। इसका अंग्रेजी अनुवाद डेविड रूबिन ने किया 'मकान' का बंगला भाषा में अनुवाद हुआ है।

पुरस्कार, सम्मान और पदोन्नति

1949 राज्य सिविल सेवा में प्रविष्ट ।

'रागदरबारी' उपन्यास पर 1969 का साहित्य अकादमी पुरस्कार ।

"मकान' उपन्यास पर मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य परिषद का पुरस्कार।

भारतेन्दु नाट्य अकादमी, उ० प्र० लखनऊ के निदेशक। अंतराष्ट्रीय लेखन सम्मेलन बेलग्रेड में भारतीय लेखक

प्रतिनिधि साहित्य अकादमी की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य।

भारत सरकार द्वारा एमरेटस फेलोशिप प्राप्त। उ० प्र० हिन्दी संस्थान का साहित्य भूषण सम्मान। शारदा सम्मान से सम्मानित।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का गोयल साहित्य पुरस्कार।

पेंगुइन बुक्स इंडिया द्वारा 'रागदरबारी' और 'पहला पड़ाव के अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित। उ० प्र० हिन्दी संस्थान का लोहिया सम्मान ।

मध्यप्रदेश शासन का शरद जोशी सम्मान।

शासन शासन का मैथिलीशरण रहस्य सम्मान।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास पर के० के० बिड़ला फाउण्डेशन का व्यास सम्मान |

भारत का सबसे बड़ा भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार उनके समग्र साहित्य पर मिला।

उपन्यास किसे कहते है? उपन्यास का क्या अर्थ हैं

उपन्यास शब्द 'उप' उपसर्ग और 'न्यास' पद के योग से बना है। जिसका अर्थ है उप= समीप, न्याय रखना स्थापित रखना (निकट रखी हुई वस्तु)। अर्थात् वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर पाठक को ऐसा लगे कि यह उसी की है, उसी के जीवन की कथा, उसी की भाषा मे कही गई हैं। उपन्यास मानव जीवन की काल्पनिक कथा है। प्रेमचंद के अनुसार "मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्रमात्र समझता हूँ । मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है। बाबू गुलाब के अनुसार," उपन्यास जीवन का चित्र हैं, प्रतिबिंब नहीं। जीवन का प्रतिबिंब कभी पूरा नही हो सकता हैं। मानव-जीवन इतना पेचीदा है कि उसका प्रतिबिंब सामने रखना प्रायः असंभव है। उपन्यासकार जीवन के निकट से निकट आता हैं, किन्तु उसे भी जीवन में बहुत कुछ छोड़ना पड़ता हैं, किन्तु जहाँ वह छोड़ता हैं वहाँ अपनी ओर से जोड़ता भी हैं।" श्यामसुन्दर दास के अनुसार," उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा हैं।" हडसन के अनुसार," उपन्यास में नामों और तिथियों के अतिरिक्त और सब बातें सच होती हैं। इतिहास में नामों और तिथियों के अतिरिक्त कोई बात सच नहीं होती।"

उपन्यास की विशेषताएं

उपन्यास की उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषणणोपरान्त उपन्यास की निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

-

1. यह अपेक्षाकृत विस्तृत रचना होती हैं।
2. उपन्यास जीवन के विविध पक्षों का समावेश होता हैं।
3. उपन्यास में वास्तविकता तथा कल्पना का कलात्मक मिश्रण होता हैं।
4. कार्य-कारण श्रंखला का निर्वाह किया जाता हैं।
5. उपन्यास में मानव-जीवन के सत्य का उद्‌घाटन होता हैं।
6. जीवन की समग्रता का चित्र इस प्रकार उपस्थित किया जाता है कि पाठक उसकी अन्तर्वस्तु तथा पात्रों से अपना तादात्मीकरण कर सके।

उपन्यास के प्रकार

* कथावस्तु के आधार पर- कथावस्तु के आधार पर उपन्यास को निम्न भागों में बांटा जा सकता है _

1) ऐतिहासिक उपन्यास -

इतिहास उपन्यास की रचना के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत अवश्य है लेकिन इतिहास को आधार बनाकर उपन्यास की रचना करना थोड़ा कठिन कार्य है। इसका कारण यह है कि जहां एक और इतिहास की रक्षा जरूरी है तो वहीं दूसरी ओर उपन्यास की साहत्यिक कथावस्तु की रक्षा करना भी जरूरी है। यदि ऐतिहासिक उपन्यास लिखने में किसी को सफलता मिली तो वह पश्चिम में सर वाल्टर स्कॉट तथा एलेग्जेंडर ड्यूमा जैसे ही लोग विख्यात हैं।

2) पारिवारिक उपन्यास -

जिन उपन्यासों में परिवार की समस्या या घटना की कथावस्तु वर्णन किया जाए वह पारिवारिक उपन्यास कहलाते हैं। पारिवारिक उपन्यासों में सामाजिक समस्या का वर्णन किया जाता है प्रेमचंद का निर्मला उपन्यास इसका उदाहरण है।

3) सामाजिक उपन्यास -

सामाजिक समस्या को लेकर लिखे जाने वाला उपन्यास सामाजिक उपन्यास कहलाता है उदाहरण के लिए सेवा सदन और निर्मला उपन्यास है।

4) पौराणिक उपन्यास -

जिन उपन्यासों में कथा का आधार पौराणिक गाथाएं हो वह पुरानी उपन्यास कहलाते हैं। उदाहरण के लिए हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास अनामदास का पोथा।

5) घटना प्रधान उपन्यास -

नाम से यह समझ आ जाता है कि उपन्यासों में किसी विशेष घटना का वर्णन किया जाए वह घटना प्रधान उपन्यास कहलाता है। इस प्रकार के उपन्यासों में पाठक की दिलचस्पी आरंभ से लेकर अंत तक बनी रहती है क्योंकि समय दर समय घटना बदलती रहती है। इस तरह के उपन्यासों में जासूसी एयारी तिलस्मी उपन्यास विख्यात हैं।

* परिवेश के आधार पर -

जिन उपन्यासों में अन्य तत्व की अपेक्षा परिवेश की प्रधानता होती है उन्हें परिवेश प्रधान उपन्यास के मध्य रखा जा सकता है। तात्पर्य लेखक जिस परिवेश में रहकर उपन्यास लिखता है और उसी परिवेश का वर्णन अधिकतर वह पूरे उपन्यास में करता है वह ही परिवेश प्रधान उपन्यास कहलाता है। उदाहरण के लिए ईश्वर नाथ रेनू का उपन्यास मैला आंचल।

* शैली के आधार पर-

शैली अर्थात उपन्यास किस रूप में प्रस्तुत किया गया है। पहले उपन्यास लिखने का एक ही तरीका था अर्थात कथावस्तु का आरंभ करके उसका विकास करना तथा अंत तक पहुंचा देना लेकिन आज ऐसा नहीं है। आज उपन्यास लिखने के लिए कई शैलियों का प्रयोग किया जाता है। जैसे आत्मकथा शैली, पत्र शैली, डायरी शैली प्रतीकात्मक शैली, लोककथात्मक शैली आदि।

* चरित्र चित्रण के आधार पर-

जिन उपन्यासों में किसी मुख्य पात्र को रखकर कथा का विकास किया जाए, वह चरित्र प्रधान उपन्यास कहलाते हैं। निर्मला उपन्यास का एक अच्छा उदाहरण है जिसमें एक नारी की विडंबना को दर्शाया गया है।

* प्रतिपाद्य के आधार पर-

इस श्रेणी में उपन्यास को हम दो आधारों पर बांट सकते हैं। पहला रचनाकार के दृष्टिकोण के आधार पर और दूसरा रचना में निहित उद्देश्य के आधार पर। रचनाकार की दृष्टि या तो आदर्शवादी होती है या फिर यथार्थवादी।

सूक्ष्म अनुशीलन पर निम्न प्रकार के उपन्यासो के दर्शन होते हैं:-

सांस्कृतिक उपन्यास
सामाजिक उपन्यास
यथार्थ वादी उपन्यास
ऐतिहासिक उपन्यास
मनोवैज्ञानिक उपन्यास
राजनीतिक उपन्यास
प्रयागेात्मक उपन्यास
तिलस्मी जादुई उपन्यास
वैज्ञानिक उपन्यास
धार्मिक उपन्यास
लोक कथात्मक उपन्यास
आंचलिक उपन्यास
रोमानी उपन्यास
कथानक प्रधान उपन्यास
चरित्र प्रधान उपन्यास
वातावरण प्रधान उपन्यास
महाकाव्यात्मक उपन्यास
जासूसी उपन्यास
समस्या प्रधान उपन्यास
भाव प्रधान उपन्यास
आदर्श वादी उपन्यास
नीति प्रधान उपन्यास
प्राकृतिक उपन्यास।

उपन्यास के तत्व

किसी भी साहित्य को एक नियमबद्ध रूप से लिखा जाता है, उपन्यास के संदर्भ में भी ऐसा ही है। उपन्यास को लिखने से पूर्व उपन्यासकार को उपन्यास के मूलभूत सिद्धांत से परिचित होना चाहिए, तभी वह सफल उपन्यास की रचना कर सकता है। उपन्यास के प्रमुख तत्व निम्नलिखित है -

१ कथावस्तु

कथा वास्तु उपन्यास का प्राण होता है, इस की कथावस्तु जीवन से सम्बन्धित होते हुये भी अधिकतर काल्पनिक होते है। किन्तु काल्पनिक कथानक स्वाभाविक एवं यथार्थ प्रतीत हो अन्यथा

पाठक उसके साथ तादात्म्य (ताल -मेल) नहीं कर सकता पायेगा। उपन्यासकार को यथार्थ जीवन से सम्बन्धित केवल विश्वसनीय और सम्भव घटनाओं को ही अपनी रचनाओं में स्थान देना चाहिए, तथा तथ्यों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए यही गुण उपन्यास को कहानी से अलग करती है।

इसमें एक कथा मुख्य होती है तथा अन्य कथाएँ गौण है जो की मुख्य कथा को गति देती रहती है, किन्तु गौण कथा मुख्य कथा की सहायक तथा विकास करने वाली होनी चाहिए। इसके लिए उसमे गठन का होना आवश्यक है। तात्पर्य यह है की मुख्य और प्रासंगिक कथाये परस्पर सम्बब्ध कोतुहल और रोचकता के साथ-साथ संगठन भी अनिवार्य है।

उपन्यास की सफलता इसी में है कि सभी घटनाये एक सूत्र में पिरोई हुई हो तथा उनमे कारण शृंखला बंध जाए।

२ पात्र व चरित्र चित्रण

उपन्यास का मुख्य विषय मानव और उसका चरित्र है उपन्यास में पात्रों का चरित्र - चित्रण क्रियाकलापों के द्वारा होना चाहिए इसी में उपन्यास की सफलता है वैसे उपन्यासकार अपनी और से भी चरित्र चित्तरण करने में स्वतंत्र होता है उपन्यास में पात्र दो प्रकार के होते हैं।

प्रधान पात्र और गौण पात्र

प्रधान पात्र :

शुरू से लेकर अंत तक उपन्यास के कथानक को गति देते हैं लक्ष्य की और अग्रसर करते हैं।

यह पात्र कथा के नायक होते हैं इन्हीं के इर्द-गिर्द संपूर्ण कथा चलती रहती है।

गौण पात्र

प्रधान पात्रो को सहायक बनाकर आते है, इसका कार्य कथानक को गति देना वातावरण की गंभीरता को काम करना वातावरण की सृष्टि करना तथा अन्य पत्रों के चरित्र पर प्रकाश डालना भी होता है।

बीच-बीच में उपस्थित होकर यह पात्र प्रधान पात्र अथवा कथावस्तु को गति देते रहते हैं।

कभी यह हंसाने का कार्य करते हैं तो कभी दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए उपस्थित होते हैं।

३ संवाद :

संवादों का प्रयोग कथानक को गति देना नाटकीयता लाना पत्रों के चरित्र का उद्घाटन करना वातावरण की सृष्टि करा आदि कई उद्देश्यों से होता है।

सम्बन्ध मुख्य रूप से कथोपकथन (संवाद) पात्तरों के भावो विचरों संवेदनाओं मनोवृतिओं आदि को व्यक्त करने में सहायक होते है। कथोपकथन की कथा और विषय पात्रों के अनुकूल होनी

चाहिए एक साफल उपन्यास के सफल कथोपकथन, कोतुहल, वर्धक नाटकीयता से पूर्ण सवद्देशय व सभाविकता होते है उनमे मुश्किल नहीं होती है।

४ वातवरण

देशकाल वातावरण का निर्माण प्रत्येक उपन्यास में आवश्यक है पाठक उपन्यास के युग और उसकी परिश्थिति से बहुत दूर होता है उन्हें पूरी तरह समझने के लिए उसे उपन्यासकार के वर्णन का सहारा लेना पड़ता है।
इसीलिए पाठक के प्रति उपन्यासकार का दाईत्व बढ़ जाता है इसके अतिरिक्त लेखक को पात्रों की मानसिकता स्थिति परिस्थतियों आदि का भी छत्रं करना पड़ता है।

पात्रों के बाह्य आंतरिक वातावरण का सफल चित्रण लेखक तभी कर सकता है जब वह अपने देश काल वेश -भूषा आदि के बारे में पूरी जानकारी रखता है।

५ भाषा शैली :
उपन्यास में वास्तु अभिव्यक्ति कला का विशेष महत्व होता है भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है और शैली उसके कथन का ढंग भाषा के द्वारा उपन्यासकार अपनी भाषा के द्वारा उपन्यासकार अपने भाषा पाठक तक सम्प्रेषण करता है।

अतः उसका सुबोध होना आवश्यक है ताकि पाठक लेखन के भावों एवं विचारों के साथ ही उसका साहित्य होना भी आवश्यक है उसमे अलंकार मुहावरे लोकोक्तिआदि का यथा स्थान प्रयोग होना चाहिए।

कथावस्तु की अभिव्यक्ति की अनेक शैलियां हो सकती है ऐतिहासिक उपन्यास अधिकतर कथ्यात्मक शैली में लिखे जाते है वर्तमान जीवन से सम्बन्धित upanyaas आत्मकथ्यात्मक शैली में अधिक सजीव हो सकते है इसके अतिरिक्त पूर्व दीप्ती डायरी शैली आदि का प्रयोग भी उपन्यास में किय जाता है।

६ . उद्देश्य :
हमारी गद्य साहित्य सृष्टि के पीछे कोई न कोई भारतीय मान्यता या उद्द्देश्य आदि आवश्यक रहता है एक अनुभवी उपन्यासकार का जीवन और जगत प्रति उसकी प्रत्येक समस्या के प्रति एक विशेष दृष्टिकोण होता है जो किसी न किसी रूप में उपन्यास के पात्रों व घटनाओ के माध्यम से अभिव्यक्ति पते है , यही उपन्यासकार का उद्द्देश्य या अभिव्यकयी जीवन दर्शन होता है।

अतः इसकी अभिव्यक्ति शोषक ढंग से होनी चाहिए तभी वह प्रभावशाली सिद्ध होगा।

सूनी घाटी का सूरज'

सूनी घाटी का सूरज'- 'सूनी घाटी का सूरज'- श्रीलाल शुक्ल का पहला उपन्यास है। इसका प्रकाशन वर्ष 1957 ई० है । इस चरित्र प्रधान उपन्यास में लेखक ने रामदास के चरित्र के माध्यम से तत्कालीन समाज व्यवस्था की दोहरी स्थितियों को व्यक्त किया है, जहाँ स्वतंत्रता-पूर्व के ग्रामीण परिवेश का सूक्ष्म और प्रामाणिक वर्णन हुआ है। " इस उपन्यास में एक शिक्षित और प्रतिभाशाली ग्रामीण युवक के टूटते सपनों और फिर उसके द्वारा एक रचनात्मक भूमिका के स्वीकार की मार्मिक कथा है।

रामदास इस उपन्यास का केन्द्रीय पात्र है। उसकी मा का देहान्त बचपन में ही हो गया था। रामदास के पिता एक किसान है।उनके पास थोड़ी जमीन भी थी। वे तीन पुत्रियों का विवाह करते-करते बोझ के तले दब जाते है। खेतों को ठाकुर के पास गिरवी रखकर कुछ रूपये लाते है। अब कर्ज चुकाने की हैसियत रामनाथ में नहीं रही। उसे ठाकुर के घर अब बंधुवा मजदूर की हैसियत से काम करना पडता है।

एक सेक्सकांड में पंडितजी पकड़े जाते हैं और गाँव से पलायन हो जाते है। बीस विद्यार्थियों का विद्यालय भी उसके साथ टूट जाता है। इसके साथ रामदास की पढ़ाई भी छूट जाती है। छठी कक्षा में पढ़ने वाला छ वर्ष का देहाती बालक रामदास अब लाचार हो गया है। ठाकुर की इच्छा है कि रामनाथ अपने बेटे रामदास को भी अपने यहाँ मजदूरी पर लगाये क्योंकि यही प्राचीन परिपाटी है। जब रामदास थोड़ा बड़ा हुआ तो पिता ने उसे घर के कामकाज में लगा दिया। रामदास बार-बार पढ़ाई की जिद करता है इससे उसके पिताजी बहुत दुःखी है। गरीब होते हुए भी रामनाथ ने अपने पुत्र रामदास की प्रारंभिक शिक्षा आरंभ करवाई थी पर अतिशय विपन्नता की स्थिति में उसे वह छोड़नी पड़ी। एक बार काम करते समय रामदास के पिता के दोनों हाथ कोल्हू के पाटों में कुचल गये। शरीर का सारा खून बह जाता है। अस्पताल ले जाने में भी बहुत देर कर दी गयी। जब रामदास अस्पताल पिता से मिलने गया तो बिलखते बेटे से अंतिम शब्द कह गये- "अपना-अपना प्रारब्ध है। बेटा घबराना नहीं भगवान गरीबों के प्रतिपालक है। उन्हीं के सहारे अपना काम किये जाना पढाई न छोड़ना बड़े ठाकुर के घर काम न करना बेटा।"इतना कहकर वे बिना दवा-दारू के चल बसे। पिता की अंतिम समय मे दी गयी यह सीख बाद में रामदास का सम्बल बनती है। इस घटना से ठाकुर बिगड़ पड़े। इस पर ठाकुर की भावना क्या थी ? ठाकुर के घर न चाहते हुए भी रामदास को दिन-रात काम करना पड़ता है। उसे ठाकुर की भैंसे चराने में लगा दिया जाता है। बड़े ठाकुर ने दो शादियाँ की थीं। ठाकुर की पहली पत्नी दिन-रात शराब पीती थी। उसके दो लड़के भी थे। ठाकुर ने मौजमस्ती के लिए अपने से छोटी उम्र की लड़की छोटुका से दुबारा शादी की थी। यही छोटुका गाँव के दो जवानों के साथ अवैध सम्बन्ध रखती है। जब इस बात का पता रामदास को चलता है तो वह उसे अठन्नी देकर खुश करना चाहती है, किन्तु रामदास यह न लेकर स्कूल जाने की बात करता है। छोटुका की सिफारिश से रामदास को स्कूल जाना नसीब हुआ। अध्ययन की अदम्य जिजीविषा रामदास को कहीं चैन नहीं लेने देती। वह स्कूल जाना शुरू करता है- ठाकुर

के बेटे के साथ, पास के एक कस्बे में ठाकुर रामदास के पिता की बली लेने के बाद भी उससे कहता है- "यह टुकड़खोर फीस के पैसे माँगता है ? इसके बाप ने कमाकर दिया था ? इन सालों पर हजारों रुपये गँवा दिए। अब यह भी छाती पर मूँग दलने को बैठा हुआ है। बेटा भैंस न चरायेंगे। पढ़ेंगे और बालिस्टरी करेंगे। हमीं एक गधे हैं जो इनके बाप का बोझ ढोएँगे। मैं कहता हूँ छोटुका, इससे कह दो, शाम को यह हमारे सामने न पड़ा करे। इसका मुँह देख लेता हूँ तो एक छटाँक खून घट जाता है। फीस नहीं है तो नाम कटा ले, भीख माँगे, हल जोते। जैसे गाँव में सब हैं. वैसे ही अपनी औकात से कुत्ते-जैसा पड़ा रहे। इसे बता दो..।"

रामदास की अमजदअली से घनी मित्रता थी। अपने सहपाठी अमजदअली के सुझाव पर स्कूल के हेडमास्टर मुन्शी नवरतनलाल के घर नौकरी स्वीकार करके रहने लगता है। वह हमेशा-हमेशा के लिए ठाकुर के चंगुल से रामदास की स्थितियों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता। रामदास बड़े ठाकुर की छूट जाता है। चुंगल से छूटा तो स्कूल के हेडमास्टर मुन्शी नवरतनलाल के घर मानों एक नौकर लग गया। पढ़ाई के साथ-साथ पूरी नौकरी करनी होती। मुन्शीजी उस अनाथ बालक से कहते हैं- "रामदास, तुम अभी लड़के हो। दुनिया का हालचाल बड़े होकर समझोगे। पर एक बात जान लो अपने को जो मिला है, उसकी बेकद्री कभी न करनी चाहिए। तुम पहले भैंस चराते थे। बाद में ठाकुर के लड़कों की रखवाली में स्कूल आने लगे। मुझे तुम्हारी कोई जरूरत न थी। अमीन साहब ही के कहने से मैंने तुम्हें अपने घर रक्खा है। तुम्हारे खेत और पेड़ भर दे देने से तुम्हारा कर्ज नहीं पट गया। मुझे अपनी जेब से पच्चीस रुपया लगाना पड़ा था ।"

यहाँ मुन्शीजी के पिता बाबू मुसद्दीलाल तथा पत्नी जड़ावनवाली दिन भर रामदास से काम लेते हैं और उसका भरपूर शोषण भी करते हैं। मुसद्दीलाल की दिन-रात सेवा तथा हाडतोड़ घरेलू नौकर की जिन्दगी के बावजूद जब रामदास प्रथम श्रेणी में परीक्षा पासकर अगली पढ़ाई के लिए कानपुर जाने लगा तो मुन्शीजी की पत्नी जड़ावनवाली ने अपने पति से कहा- "सब कुकुरिया जगन्नाथन जाएँगी तो पत्तल कौन चाटेगा ?

मुन्शीजी के पिता एवं पत्नी के द्वारा दी गई तमाम यातनाओं को सहते हुए रामदास निरन्तर अध्ययन में संलग्न रहा। इसी कारण रामदास को आगे पढ़ने का मौका मिला। मुन्शीजी चाहते थे कि रामदास शिक्षा के क्षेत्र में और आगे बढ़े। अमजदअली के मामा के कहने पर रामदास को गर्मी की छुट्टियों में एक सिक्ख ठेकेदार के यहाँ नौकरी का काम मिल जाता है। यहाँ आकर उसने मजदूर जीवन की विवशता, उनका शोषण, ठेकेदारों का जुल्म तथा मजदूर स्त्रियों की दयनीय स्थिति को बहुत नजदीक से देखा। सोबरन सिंह जो यहाँ का ठेकेदार है वह मजदूरों को यह कहकर लाया था कि नहर की खुदाई का काम है, लेकिन मज़दूरों को वहाँ जाने के बाद पता चला कि काम बारूद से चट्टाने उड़ाने का है। उन्होंने ऐसा जोखिम भरा कार्य पहले कभी नहीं किया था।ठेकेदार सोबरनसिंह पुलिस का सहारा लेकर मजदूरों को डरा-धमकाकर काम करने पर विवश कर देता है। बीहड़ इलाके में मजदूर स्त्रियों दिन-रात काम करती हैं। काम करने वाली एक मज़दूरनी के बच्चे को एक नरभक्षी तेंदुआ उठा ले जाता है। कुछ अन्य मजदूर स्त्रियों के बच्चों को चेचक निकल आती है। एक ढोंगी वैद्य के कहने पर अशिक्षित स्त्रियाँ शीतलामाता की पूजापाठ करती

हैं। दवा-दारू के अभाव में चेचक का रोग दिन-प्रतिदिन फैलता जाता है और कुछ बच्चों की मृत्यु हो जाती है। एक बूढ़े व्यक्ति का हाथ पत्थर के नीचे कुचल जाता है, उसका इलाज नहीं हो पाता और बाद में उसकी मृत्यु हो जाती है। एक रात मजदूर चोरी से अपने घर की ओर भाग जाते हैं, लेकिन ठेकेदार के आदमी पकड़कर उनके साथ अनेक तरह का अमानवीय व्यवहार करते हैं। जैसे-तैसे मजदूरों ने एक महीना पूरा किया। वे जब चलने लगे तो ठेकेदार ने उन्हें केवल बाईस दिन की ही मजदूरी दी। बेचारे मजदूर विवश थे। वे चुपचाप जो कुछ मिला स्वीकार करके चले गये।। रामदास अपनी आँखों के सामने श्रमिकों का शोषण होते देखता है। रामदास अब सत्रह साल का हो गया था। उसमें कुछ समझने की शक्ति भी आ गई थी। पर रामदास ने ये सभी बातें एक सपने की तरह मिटा दी। "शिकार सदैव वही रहता, शिकारी ही बदलते। इन्हीं शिकारियों में जमींदार, राजे महाजन आते। चोर और डकैत आते। पत्थर-जैसी छाती को पीसकर, समस्त पुरुषार्थ को आँसुओं में बहा देनेवाली निराशा आती। सब तरह से जीवन को जकड़कर केवल पथराई आँखों से सब कुछ देखते रहने वाली जड़ता आती। शिकार वही था, शिकारी अनेक थे ।"

मुन्शी नवरतनलाल ने रामदास को दो चिट्ठियाँ दीं। इसमें पहली चिट्ठी बाबू रामरतन के नाम थी, जिनकी कृपा से रामदास को गंगापुर रियासत के महाराज की कोठी में रामदास के रहने का प्रबन्ध हो जाता है। दूसरी चिट्ठी क्षत्रिय स्कूल के हेडमास्टर अंबिकेश सिंह के नाम लिखी गई थी जिन्होंने रामदास की बहुत सहायता की। क्षत्रिय स्कूल में उसे प्रवेश तो मिल गया पर शहरी परिवेश उसे कदम-कदम पर चौकाता है। कुशाग्र बुद्धि और मेहनती होने के कारण वह अध्यापकों और छात्रों का प्रिय बन जाता है। उसे अब वजीफा भी मिलने लगा। है। रियासत की कोठी पर चीनी मिल के सेठ का कब्जा हो जाने पर उसे एक गंदे नाले के पास सड़ौंध और सीलन भरे कमरे में रहना पड़ता है। रामदास ने जब स्कूल के हेडमास्टर अंबिकेश सिंह से रहने की विवशता बताई तो उन्होंने स्कूल के चपराशियों की एक कोठरी में उसे रहने की व्यवस्था कर दी। उसे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने का काम भी दिलवा दिया ताकि उसे किसी भी प्रकार की आर्थिक परेशानी न हो।

रामदास की मित्रता एक धनिक परिवार के सहपाठी श्याम मोहन से होती है। श्याम मोहन भावुक तथा कवि हृदय व्यक्ति है। वह सुषमा नाम की एक बंगाली लड़की से प्रेम करता है। पिता विवाह की अनुमति नहीं देते इसलिए वह सुषमा के साथ घर से भाग जाता है। बाद में पिता उन दोनों व्यक्तियों को स्वीकारने के लिए तैयार होते हैं। श्याम मोहन अध्ययन छोड़कर अपने पिता के कारोबार मोटर-व्यवसाय में लग जाता है।

स्कूल के मैनेजर दो वर्ष से लगातार कार्य कर रहे हेडमास्टर ठाकुर अंबिकेश सिंह को प्रिन्सिपल बनाना नहीं चाहते। अंबिकेश सिंह की प्रेरणा से रामदास अपने सहपाठी मित्र सुरेन्द्रप्रताप सिंह से मिलकर स्कूल में हड़ताल करवाता है। यह हड़ताल लगातार तीन महीने चलती है। विजय अंबिकेश सिंह की होती है। मैनेजर को अपना पद छोड़ना पड़ता है। प्रबंध के लिए सरकारी समिति बनती है तथा कार्यकारी हेडमास्टर अंबिकेश सिंह प्रिन्सिपल पद पर नियुक्त होते हैं।
इंटरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर रामदास आगे पढ़ने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय में चला जाता है। ठाकुर अंबिकेश सिंह रामदास को अपने पुत्र की तरह मानते हैं।

उनकी जान-पहचान से रामदास को लखनऊ में एक पेन्शन प्राप्त उच्च अधिकारी ठाकुर राजेश्वरसिंह की कोठी में रहने के लिए एक छोटा-सा कमरा मिल जाता है। रामदास का स्वभाव ही कुछ ऐसा है कि उसे सभी व्यक्तियों की ओर से स्नेह प्राप्त होता है। राजेश्वरसिंह का भी रामदास के प्रति विशेष लगाव हो जाता है। उन्होंने रामदास को बहुत-सी सुविधाएँ उपलब्ध करायी तथा उसकी आर्थिक सहायता भी की। उनकी 17-18 वर्ष की एक बेटी है, जो आधुनिक जीवन शैली में जीती है। योन-भावना से वशीभूत होकर वह शोफर फिलिप के साथ भाग जाती है। ठाकुर साहब उसे दिल्ली से वापस लाते हैं। बदनामी के डर से वह बेटी की शादी जल्दी कराना चाहते हैं। वे रामदास के सम्मुख शादी का प्रस्ताव रखते हैं तथा साथ में विशाल संपत्ति का प्रलोभन भी देते रामदास इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर पाता। ठाकुर राजेश्वरसिंह हमेशा के लिए रामदास से अपना नाता तोड़ देते हैं।

लखनऊ विश्वविद्यालय में उसका परिचय रामानुज, राजघर तथा सत्या से होता है। रामानुज तथा राजधर पढ़ाई में उसकी सहायता करते हैं तो सत्या रामदास के प्रति अधिक सहानुभूति रखती है। रामानुज ने अपनी कम उम्र लिखा रखी है इसलिए उसे दूसरी प्रतियोगिताओं में बैठने का अवसर मिलता है। उसका चुनाव इंडियन पुलिस सर्विस (IPS) के लिए हो जाता है। रामदास को ऐसा अवसर कभी नहीं मिल पाता।

सत्या के पिताजी इंजीनियर है। वह अपने पिता की एकमात्र संतान है। घर में केवल दो ही व्यक्ति रहते हैं पिता-पुत्री रामदास की प्रगाढता सत्या से होती है। सत्या का नाम रामदास ने अपनी आत्मकथा में अनीता रखा है। अनीता विभिन्न संकटों से उसे उबारती है और जीवन के कटु सत्य का उसे परिचय करवाती है। उसमें आत्मबल का संचार करती है तथा जीवन के निराश क्षणों में उसे ढांढस भी देती है। जब रामदास पूरी तरह टूट जाता है, अपने आपको अकेला महसूस करता है, तब अनीता ही सबसे पहले उसका सम्बल बनती है। इस प्रकार वह रामदास की शुभचिंतक है, उससे सहानुभूति रखती है, उसमें रुचि लेती है क्योंकि वह उसकी प्रतिभा की पहले से कायल है।

रामदास एम० ए० (अर्थशास्त्र). एल० एल० बी० कर लेता है पर उसके बावजूद भी उसे अच्छी नौकरी नहीं मिल पाती। प्रो० सिन्हा के निर्देशन में वह किसानों में कर्ज की समस्या पर शोध करता है। प्रोफेसर सिन्हा तथा उन जैसे अन्य रामदास की सहायता करने के नाम पर उसकी प्रतिभा का शोषण करते हैं। प्रो० सिन्हा ने आश्वासन भी दिया था कि वे उसकी पुस्तक छपवाने की उचित व्यवस्था भी करेंगे। पर वह रामदास द्वारा लिखी अर्थशास्त्र की पुस्तक अपने नाम छपवा लेते हैं। धन के लिए रामदास को अपनी कई पुस्तकें तथा निबन्ध बेचने पड़ते हैं, जिसे लोग अपने नाम से छपवा लेते हैं। उसे एक कॉलेज में पढ़ाने की अंशकालिक नौकरी तो मिलती है पर पूर्णकालिक अध्यापकों जितना उसे काम करना पड़ता है। वेतन 80 रुपये हैं पर उसके हाथों में केवल 60 रुपये आते हैं। 20 रुपये उसे कॉलेज में दान के रूप में देने पड़ते हैं। इस पर भी उसे कॉलेज से मई के महीने में निकालकर जुलाई में फिर बुलाने का आश्वासन दिया जाता है। किसी खास व्यक्ति का दामाद जो थर्ड डिवीजन में उत्तीर्ण हुआ है उसकी विश्वविद्यालय में योग्यतम

पद पर नियुक्ति होती है, पर रामदास की नहीं। यहाँ प्रो० सिन्हा द्वारा होनहार विद्यार्थियों का शोषण, विश्वविद्यालय की प्रतिभा की उपेक्षा तथा सम्बन्धों के सहारे अयोग्य व्यक्ति की योग्य पद पर नियुक्ति उपन्यास के बहुआयामी संदर्भ है। यहाँ नवयुवकों में देखी जाती निराशा और उनका विद्रोह इन शब्दों में खुलकर हमारे सामने आता है- "देखो रामदास, तुम अकेले नहीं हो यह शताब्दी ही नवयुवकों पर आघात करती है। न जाने कितने आहत, अपंग विद्यार्थी इसी यूनिवर्सिटी में मिल जायेंगे। वे सब एक-दूसरे की भाषा समझते हैं, एक-दूसरे के अतीत से और भविष्य से परिचित हैं। केवल एक-दूसरे का नाम नहीं जानते हैं। पर एक बार जान लेने पर भूलते नहीं। उन सबकी चेष्टाओं को तुम कैसे ठुकरा सकते हो?" आधुनिक शिक्षा पद्धति कैसी है, उसके परिणाम क्या आ सकते हैं, उसमें कितने होनहार विद्यार्थियों की जिन्दगी बरबाद होती है, यह हम रामदास के द्वारा भलीभाँति जान सकते हैं।

सत्या का विवाह रामानुज से हो जाता है। श्याम मोहन "कामधेनु" पत्र निकालता है तथा प्रसिद्ध कला-समीक्षक बन जाता है। राजधर शिक्षा विभाग में उपमंत्री के पद पर बैठता है। सुरेन्द्र प्रताप कई जमीन का मालिक बन जाता है। जीवन में केवल असहाय और अकेला रहता है तो वह रामदास है जिसे बचपन में सबसे मेधावी छात्र समझा जाता था।

अंत में अमजदअली जिलेदार बन जाता है, जो रामदास के बचपन का मित्र है। अमजदअली के कहने पर उसे ग्रामीण क्षेत्र में 135 रुपये पर हाईस्कूल में नौकरी मिलती है, जिसे वह अपनी नियति मान सहर्ष स्वीकारता है।

युग के आकर्षण, अतीत की प्रताड़ना और वर्तमान की निराशा को साथ लेकर वह उसी अँधेरी और सुनसान घाटी में उतरने का फैसला करता है अर्थात् वह हमेशा के लिए देहात में मास्टरी करने जा रहा है, जहाँ उसकी सर्वाधिक आवश्यकता है। रामदास के मन में कई प्रकार के प्रश्न उठते हैं कि सुख और सुविधा को त्यागकर आनंद के सब साधनों को ठुकराकर, इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सिर्फ मुझे ही क्यों आना पड़ा ?

अंत में लेखक ने खुद रामदास के पात्र के द्वारा एक आदर्शात्मक समाधान भी प्रस्तुत किया है- "समझ लो, रामदास, इस रोग-शोक-जर्जर प्रांतर में 135 रुपये मासिक पर मास्टरी करने के लिए तुम्हीं जैसो को आना पड़ता है। आरंभ से ही जो व्यवस्था तुम्हारे मार्ग में बाधाओं को खींच-खींच कर लाती रही, वही अब तुम्हे इन बाधाओं के देश में खींचे लिए जा रही है। तुम देख नहीं रहे हो, यहाँ आकर, ख्याति और उन्नति की सब आकांक्षाओं का गला घोंटकर अपने को जीवन्मृत बनाने के लिए तुम्हीं क्यों चुने गये हो ? रामदास के मन में इस प्रकार के भाव निरंतर उठते जाते हैं। इन क्रूर भावों को दबाकर वह बार-बार अपने आपसे कहता है- "यहाँ मैं न आऊँगा तो और कौन आएगा ? किसी और को यहाँ आने की गरज की क्या है ?

कुल मिलाकर- सूनी घाटी का सूरज" टुकड़ा टुकड़ा यथार्थ है, टुकड़ा टुकड़ा संघर्ष और टुकड़ा टुकड़ा आदर्श की मिली जुली संरचना है, पठनीयता जिसका प्रभावकारी गुण है।"

चरित्र-सृष्टि सूनी घाटी का सूरज

रामदास- सूनी घाटी का सूरज उपन्यास का केन्द्रीय पात्र है। वह निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। इस उपन्यास में रामदास के चरित्र द्वारा एक शिक्षित और प्रतिभाशाली ग्रामीण युवक के टूटते सपनों और फिर उसके द्वारा एक रचनात्मक भूमिका के स्वीकार की मार्मिक कथा है। इस उपन्यास में उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग के मध्य उत्पन्न होने वाले द्वन्द्वों के परिणामस्वरूप निम्न वर्ग की दयनीय दशा का व्यापक चित्रण मिलता है। उपन्यास के आरम्भ से लेकर अंत तक रामदास पर उच्च वर्ग के विभिन्न पात्रों द्वारा किये गये अत्याचार पाठक को समाज में निम्न वर्ग की स्थिति से परिचित करवाते हैं। इस प्रकार अपनी पहली औपन्यासिक कृति 'सूनी घाटी का सूरज में श्रीलाल शुक्ल ने रामदास के चरित्र के द्वारा सामंती और पूँजीवादी व्यवस्था के मुखौटे के नकाब को खोलने का प्रयत्न किया है।

उपन्यास का मुख्य पात्र रामदास गरीबी, मजबूरी, विवशता तथा शोषण के कारण टूटती इच्छाओं वाला युवक है जो मुख्यतः निम्न वर्ग का प्रतीक है। पिता की विवशता, जमींदार की क्रूरता, अध्यापक जैसे सम्मानित व्यक्ति के द्वारा शोषण का शिकार होना तथा गरीबी का साकार चित्र इस रचना में रामदास के चरित्र के द्वारा दिखाया है। गरीब एवं कमजोर व्यक्ति को प्रत्येक व्यक्ति दबाना चाहता है यह कहावत इस उपन्यास में रामदास के चरित्र में चरितार्थ होती दिखायी देती है। लेखक ने रामदास के चरित्र के माध्यम से शोषित वर्ग की युवा पीढ़ी का चित्रण किया है। शोषक और शोषित वर्ग के बीच की दीवार आज भी पूरी तरह से टूटी नहीं है। आज भी दूर-दराज गाँवों में रामदास के गाँव के समान ही शैक्षणिक संस्थाओं का अभाव है। ऐसी परिस्थिति में वहाँ का युवा वर्ग मात्र श्रमशक्ति पर जीवन-यापन करने के लिए बाध्य है। आज के युग में सामन्तशाही प्रथा के स्वरूप में परिवर्तन आया है किन्तु यह प्रथा किसी न किसी रूप में आज भी विद्यमान है। शोषक और शोषित, शासक और शासित वर्ग के बीच खाई समाप्त होने के स्थान पर दिन पर दिन गहरी होती जा रही है। रामदास परिस्थितियों से टकराते टकराते, उनका सामना करते-करते, निराशा और क्षोभ से परिपूर्ण हो शान्ति की तलाश में गाँव की ओर वापस लौटता है। इस प्रकार ऐसी परिस्थितियों में रामदास जैसे नवयुवक चारों ओर से शोषण का शिकार बनकर किसी सूनी घाटी की तलाश करते हैं।

रामदास को पहले बड़े ठाकुर के यहाँ न चाहते हुए भी मवेशी चराने का काम करना पड़ता है। अध्ययन की अदम्य लालसा रामदास की बेचैन बना देती है। अतः पिता की मृत्यु के बाद रामदास अपनी जमीन और अपने गाँव को छोड़कर पढ़ने की इच्छा से दूसरे गाँव के हेडमास्टर मुन्शी नवरतनलाल के पास जाता है। वहाँ भी वह शोषण का शिकार बनता है। हेडमास्टर की पत्नी उड़ानवाली तथा पिता मुसद्दीलाल के इशारों पर रामदास को नाचना पड़ता है। वह ठीक समय पर स्कूल नहीं पहुँच पाता, परिणामस्वरूप अर्धवार्षिक परीक्षा में फेल हो जाता है। पढ़ने की अदस्य लालसा और मित्र के सहयोग से वह उच्च श्रेणी की शिक्षा प्राप्त करता है। हेडमास्टर की अनुकम्पा से शहर में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करते हुए एक बार फिर से प्रोफेसर सिन्हा के शोषण का शिकार बनता है। रामदास ने खूब मेहनत करके अर्थशास्त्र की पुस्तक लिखी किन्तु प्रकाशित होने पर पता चला कि लेखक के स्थान पर रामदास का नाम न होकर उसके यापक का नाम छपा है।

आधुनिक शिक्षा पद्धति के दूषित होने पर भी रामदास प्रतिभाशाली है। वह एम० ए० और एल० एल० बी० की डिग्री अच्छे अंकों से प्राप्त करता है, पर उसे कहीं भी अच्छी नौकरी नहीं मिल पाती। उसकी नौकरी अंशकालिक है, परन्तु वह पूर्णकालिक अध्यापकों जितना ही काम करता है। उसे सिर्फ अस्सी रुपये वेतन मिलता है। उसमें से भी बीस रुपये कॉलेज को दान के रूप में देने पड़ते हैं। रामदास को कॉलेज से मई के महीने में निकालकर जुलाई में फिर से बुलाने का आश्वासन दिया जाता है। इस प्रकार कॉलेज के प्रबन्धक गर्मी की छुट्टियों में दो महीने की तनख्वाह बचा लेते हैं।

सूनी घाटी का सूरज उपन्यास में रामदास जैसे प्रतिभाशाली नवयुवक की विडम्बनापूर्ण स्थितियों का चित्रण किया गया है। उपन्यासकार ने यही दिखाने का प्रयत्न किया है कि किस प्रकार एक प्रतिभाशाली व्यक्ति का दुरुपयोग किया जाता है। रामदास ने एक मेधावी छात्र के रूप में प्रथम श्रेणी में डिग्रियों हासिल की है, लेकिन उसके पास कोई सिफारिश नहीं है, वह किसी बड़े व्यक्ति का दामाद या रिश्तेदार नहीं है, इसलिए उसका कोई भविष्य नहीं है। वह न तो लेक्चरर बन पाया न सम्पादक। अतः बचपन से लेकर अभी तक वह कठिनाइयों को झेलता हुआ शोषण का शिकार ही बनता रहा है। अपनी समस्याओं, महत्त्वाकांक्षाओं, घुटन, निराशा, टूटन, व्यथा की पीड़ा से त्रस्त, स्वप्न भंग जैसी परिस्थितियों का सामना करते हुए रामदास अपने आप में टूटकर बिखर जाता है। उस समय उसकी शुभचिंतक सत्या (रामदास ने अपनी आत्मकथा में सत्या का नाम अनीता रखा है।) ही उसका सम्बल बनती है। जीवन के कटु सत्य का वह रामदास को परिचय करवाती है। फलस्वरूप अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को छोड़तेहुए 135 रुपये मासिक वेतन की नौकरी स्वीकार कर वह गाँव की ओर वापस मुड़ता है। इसलिए "रामदास निरन्तर टूटन की असह्य पीड़ा से आक्रान्त होकर किसी सूनी घाटी की शरण लेने के लिए बाध्य हो गया। इस तरह यह उपन्यास उन ग्रामीण युवकों की वेदनाओं की गाथा है। जहाँ सपने जन्म लेते हैं, वे सींचे जाते हैं, पर उसका अन्त टूटन और निराशा में होता है। आदर्शों की अर्थी निकलती है और आशा तथा विश्वास परिस्थितियों से टकराकर चूर-चूर हो जाते हैं।""

इस उपन्यास में सामन्तशाही प्रथा से पीडित रामदास जैसे लोगों के जीवन में आने वाली समस्याओं का निरूपण बहुत ही सहज, सरल एवं स्पष्ट रूप से हुआ है। इन सभी समस्याओं में सबसे प्रमुख समस्या है गरीबी की रामदास एक गरीब और अनाथ युवक है। आज के परिप्रेक्ष्य में गरीबी सबसे बड़ी समस्या तथा सबसे बड़ा अभिशाप है। अभी यानि स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में बदलते हुए स्वरूप में शोषण-चक्र चलायमान है- "ये सनातन शोषण आज नए चेहरे लगाकर नयी व्यवस्था के हर क्षेत्र में नये ढंग से शोषण कर रहे हैं। पहले ग्रामीण युवकों के पास मात्र श्रम शक्ति थी, उस समय उसके श्रम का शोषण हुआ करता था। आज उसने मन और बुद्धि का संस्कार कर जो प्रतिभा अर्जित की है उसका शोषण हो रहा है। वह पहले भी शोषित था, आज भी है। लेकिन पहले आज के समान उसमें स्वत्वबोध और तीव्र संवेदनशील मानसिकता नहीं थी, इसलिए शोषण की मानसिक पीड़ा उस मात्रा में अनुभव नहीं कर सकता था. जिस मात्रा में आज कर रहा है।"2

रामदास एक प्रतिभा सम्पन्न युवक है। एक प्रतिभा सम्पन्न युवक होने के बावजूद भी रामदास को ही क्यों इस रोग-शक्ति-जर्जर गाँव में आना पड़ा? वही क्यों ? जब ऐसे सवाल मन में खड़े होते हैं तो उसका उत्तर भी मन को ही देना पड़ता है "क्योंकि वह गरीब था। शासक वर्ग समाज के सवर्ण जाति के गरीब को और निम्नतम श्रमिक वर्ग को अपना सेवक ही देखना चाहता है। यह बात रामदास के चरित्र के माध्यम से लेखक श्रीलाल शुक्ल ने जमकर दिखाई है। सर्वहारा चाहे किसी भी जाति का हो उसकी प्रगति में बाधाएँ आना स्वाभाविक है। श्याममोहन, कुंवर सुरेन्द्र प्रताप, राजधर सभी अपने वंश की प्रतिभा और क्षमता के सहारे आगे बढ़ने वाले लोग हैं। ये सभी उद्घाटनकर्ता कलाप्रेमी और भाग्य विधाता बन जाते हैं। इन सभी व्यक्तियों द्वारा शोषित रामदास अंततः वहीं लौटता है, जहाँ कोई नहीं जाना चाहता। यहाँ लेखक ने रामदास के चरित्र के द्वारा एक आदर्शात्मक समाधान प्रस्तुत किया है- "गाँव में जाना। दलितों की शक्ति बनना। अशिक्षितों को विद्या देना। उनकी निराशा, उनकी मूर्छा को समाप्त करके उन्हें नई चेतना देना। झुलसी हुई पहाड़ियों की छाया में, एक धूसर संध्या के मलिन आतंक में पाए हुए कुछ किशोर संस्कारों को साकार करना। ये सब महान उद्देश्य है।"इस उपन्यास में रामदास के पत्र का सर्वहाराकरण ही नहीं हुआ है बटिक सर्वहाराओं के क्षेत्र में काम करने की विवशता और कुण्ठा भी दिखाई गयी है। रामदास का प्रश्न है कि बार-बार शिकार वही होता है सिर्फ शिकारी ही बदलते है- इन्हीं शिकारियों मे जमीदार, महाजन आते।

इस प्रकार देखे तो श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित सूनी घाटी का सूरज उपन्यास इस अर्थ में शोषण का व्यवस्थित समाजशास्त्र दिखाई देता है।

रामदास के चरित्र के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डालते हुए डॉ० पुष्पपाल सिंह लिखते है "श्रीलाल शुक्ल का पहला उपन्यास 'सूनी घाटी का सूरज' (1957) अपने नायक रामदास के माध्यम से एक पूरी पीढ़ी की तेजस प्रतिभा की दारुण अवमानना की प्रभावी कथा है जो अब भी अपनी सार्थकता की प्रतीति इस रूप में देती है कि रामदास जैसों के अनुपयुक्त स्थान पर पहुँचने- मिसप्लेसमेण्ट - की कहानी अभी रुकी नहीं है, वह और भी तीव्र गति से अपने घिनौने रूप प्रदर्शित कर रही है। प्रतिभा, योग्यता और कार्यक्षमता, निष्ठा सब रद्दी की टोकरी की वस्तु बन रही है और रद्दी की टोकरी की जिन्से पदासीन, सत्तासीन हैं। "सूनी घाटी का सूरज में रामदास, सत्या और रामानुज की प्रेमकथा के त्रिकोण को लगभग लेखक ने खारिज कर दिया है। इसके स्थान पर कथा विकास के केन्द्र में गाँव की मुक्ति की समस्या, दुराचार से मुक्ति की समस्या तथा कथनी-करनी के बीच फासले को पाटने की समस्या को रामदास के चरित्र के द्वारा बृहद परिप्रेक्ष्य में दिखाया गया है।

इस प्रकार सूनी घाटी का सूरज स्वातंत्र्योत्तर युगीन परिवेश में युवापीढ़ी का प्रतिनिधित्व कर रहे रामदास के स्वप्न भंग की कथा का जीवन्त चित्र है। प्रतिभाशाली विद्यार्थी हर ओर से शोषण का शिकार किस रूप में किस तरह होता है. पूरी कथावस्तु इसी पर आधारित है। विसंगतियों एवं विद्रूपताओं से भरे समाज में शोषण का शिकार बना रामदास अपने प्रगति के सभी सोपानों को छोड़कर अस्ताचल के सूर्य के समान सूनी घाटियों में डूब जाना चाहता है। वह शहरी परिवेश

छोड़कर देहात में नौकरी स्वीकार कर लेता है। इस उपन्यास में कोईआशा का सूरज नहीं दिखायी देता सारा का सारा वातावरण सूनी घाटी जैसा ही है। आशा का छिटपुट किरण जो हमें रामदास के चरित्र में दिखाई देती है वह भी सूनी घाटियों में विलीन हो जाती है। रामदास इन्हीं सूनी घाटियों में समा जाने वाला तेजस्वी किन्तु तेजहीन सूर्य है।

रामनाथ- उपन्यास के नायक रामदास के पिता है। वह एक गरीब किसान है। उनके पास थोड़ी ज़मीन भी है। वे तीन पुत्रियों का विवाह करते-करते बड़े ठाकुर के ऋण के बोझ तले दब जाते हैं। खेतों को ठाकुर के पास गिरवी रखकर कुछ रुपये लाते हैं। कर्ज न चुका पाने की स्थिति में कुछ समय पश्चात् रामनाथ बड़े ठाकुर के घर बंधुआ मजदूर की हैसियत से कार्य करने लगता है। ठाकुर की इच्छा है कि रामनाथ अपने बेटे रामदास को भी इसी काम पर लगाये क्योंकि यही प्राचीन परिपाटी है। गरीब होते हुए भी रामनाथ ने अपने पुत्र रामदास की प्रारंभिक शिक्षा आरंभ करवाई थी, जो अतिशय विपन्नता की स्थिति में रामदास को छोड़नी पड़ी थी। एक बार काम करते समय रामनाथ के दोनों हाथ कोल्हू में पिस जाते हैं और शरीर का सारा खून बह जाता है। जब रामदास अस्पताल में पिता रामनाथ से मिलने गया तो वह बिलखते बेटे को अंतिम शब्द कह गये- "अपना-अपना प्रारब्ध है बेटा, घबराना नहीं, भगवान गरीबों के प्रतिपालक हैं। उन्हीं के सहारे अपना काम किए जाना। पढ़ाई न छोड़ना। बड़े ठाकुर के घर काम न करना बेटा ।" रामनाथ द्वारा दी गई ये अंतिम सीख जीवन भर रामदास का सम्बल बनती है।

बड़े ठाकुर जमींदार वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। ठाकुर ने जमींदार की हैसियत से दो शादियों की थीं। पहली स्त्री दिन-रात शराब पीती थी। उसके दो लड़के भी थे। मौजमस्ती के लिए ठाकुर ने अपने से छोटी उम्र की लड़की छोटुका के साथ दुबारा शादी की। यह छोटुका गाँव के दो जवानों के साथ अवैध सम्बन्धः भी रखती है।

बड़े ठाकुर के चरित्र के माध्यम से लेखक श्रीलाल शुक्ल ने सामन्तवादी प्रथा को उद्घाटित किया है। स्वतंत्रता मिलने के इतने वर्षों के बाद भी सामन्तवादी प्रथा कहीं न कहीं आज भी मौजूद है। लेखक श्रीलाल शुक्ल ने 'रागदरबारी' उपन्यास में वैद्यजी के चरित्र के माध्यम से तो इस उपन्यास में बड़े ठाकुर के चरित्र के माध्यम से सामन्तवादी प्रथा को उद्घाटित किया है। स्वतंत्रता के बाद इस प्रथा का परिष्कृत रूप में मात्र हस्तान्तरण ही हुआ है। जमींदार अपने आपको असुरक्षित महसूस करते हुए भी लोगों का शोषण प्रकारान्तर से आज भी वैसे ही कर रहे हैं जैसे आजादी के पहले करते थे। बड़े ठाकुर जैसे कई ठेकेदार आज भी लोगों का शोषण करते समाज में दिखाई देते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बंधुआ मजदूर या बाल मजदूरी की समस्या यत्र-तत्र दिखाई देती है। वैसे स्वतंत्रता के बाद सर्वाधिक स्तर पर बंधुआ मजदूर का उन्मूलन, समानता औरचौदह वर्ष के बच्चों की शिक्षा निःशुल्क कर दी गई है. जबकि ये सारी समस्याएँ व्यावहारिक स्तर पर आज भी उसी रूप में मौजूद है। बदलते परिदृश्य के इसमें गुणात्मक परिवर्तन की बजाय जड़ता आती जा रही है। बड़े ठाकुर रामदाम जो अभी बालक है, उसके मुँह पर ही कहता है- "यह टुकडखोर फीस के पै माँगता है? इसके बाप ने कमाकर दिया था ? इन सालों पर हजारो रुपये दिए। अब यह भी छाती पर मूँग दलने को बैठा हुआ है। बेटा मैसन बचाने पढ़ेंगे और बालिस्टरी करेंगे। हमी एक

गधे हैं जो इनके बाप का बोझ मैं कहता हूँ, छोटुका इससे कह दो, शाम को यह हमारे सामने न पड़ा करे। इनका मुँह देख लेता हूँ तो एक छटाँक खून घट जाता है। फीस नहीं है तो नाम कटा ले, भीख माँगे, हल जोते। जैसे गाँव में सब हैं, वैसे ही अपनी औकात से कुतते

जैसा पड़ा रहे। इसे बता दो.. " आगे भी यह कहता है- उमर-भर इसके बाप ने गुलामी की गोबर उठाया, बैल चराया चारा काटा, पानी खींचा, नालिश की। अब ये बालिस्टरी करेंगे? बाप न मारी मेंढकी, बेटा तीरंदाज

इस प्रकार बड़े ठाकुर के चरित्र के द्वारा रामनाथ का शोषण दिखाकर श्रीलाल शुक्लजी ने बालाश्रम बंधुआ मजदूर की समस्या को उद्घाटित किया है। रामदास बचपन में अपने पिता के साथ बँधुआ मजदूर की हैसियत से न चाहते हुए भी शिक्षा का परित्याग करके बड़े ठाकुर के यहाँ काम पर जाने को विवश है। समाज में फैली इन कुरीतियों की ओर लेखक ने पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है।

मुन्शी नवरतनलाल स्कूल के हेडमास्टर है। मित्र अमजदअली के सुझाव पर रामदास बड़े ठाकुर के चंगुल से छूटकर मुन्शी नवरतनलाल के घर नौकरी स्वीकार करता है। घर का पूरा काम काज करना और समय मिले तो पढ़ना यह रामदास का रोज का काम था। हेडमास्टर की पत्नी जड़ावनवाली और पिता मुसद्दीलाल रामदास से दिनभर काम करवाते हैं और उसका भरपूर शोषण करते हैं। ये दोनों रामदास को अपनी ऊंगलियों पर नचाते रहते हैं। अधिक काम काज के कारण रामदास समय से स्कूल नहीं पहुँच पाता, वह अपनी पढ़ाई ठीक ढंग से नहीं कर पाता। परिणामस्वरूप वह अर्धवार्षिक परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाता है। फिर भी पढ़ने की अदम्य लालसा और मित्र के सहयोग की वजह से लगातार मेहनत कर उच्च श्रेणी की शिक्षा ग्रहण करने योग्य हो जाता है। किसी ने सच ही कहा है "जिस देश को अभी-अभी दो सौ साल की गुलामी के बाद आजादी मिली थी उस देश में बड़े ठाकुर ज्यों के त्यों बने हुए थे. मुसद्दीलाल और उनके सुपुत्र नवरतनलाल भी बने हुए थे। ऐसे देश में लोकतंत्र, समानता, भाईचारा, विश्वबंधुत्व और राष्ट्रीयता के मूल्यों को ठोस रूप में चरितार्थ करता था। ऐसे विराट राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अपनी पराधीनता से बेखबर जडावनवाली गरीबों की संतान को कुत्तेसे ज्यादा अहमियत नहीं देना चाहती। रामदास अपनी आगे की पढ़ाई के लिए जब कानपुर जाने लगा तो जड़ावनवाली ने अपने पति मुन्शी नवरतनलाल से कहा- "सब कुकुरिया जगन्नाथ जाएँगी तो पत्तल कौन चाटेगा प्रोफेसर सिन्हा- आधुनिक भ्रष्ट शिक्षा नीति का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमारा शैक्षणिक स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है। लेखक श्रीलाल शुक्ल ने इस उपन्यास में भ्रष्ट शिक्षा नीति के दूषित वातावरण का तथा शिक्षकों द्वारा किये गये अत्याचारों का खुलकर वर्णन प्रो० सिन्हा के माध्यम से दिखाया है। प्रो० सिन्हा रामदास की सहायता करने के नाम पर उसकी प्रतिभा का शोषण करते हैं। प्रो० सिन्हा ने रामदास को अर्थशास्त्र की पुस्तक लिखने का काम दिया था और आश्वासन दिया था कि वे उसकी पुस्तक छपवाने की उचित व्यवस्था भी करेंगे। रामदास ने दिन रात एक करके वह पुस्तक लिखी थी जिसे प्रो० सिन्हा बाद में अपने नाम से छपवा लेते हैं।

प्रो० सिन्हा के चरित्र को यदि ध्यान से देखा जाए तो उनका चरित्र परशुराम और द्रोणाचार्य से कहीं अधिक बढ़कर है। परशुराम और द्रोणाचार्य ने तो अपने दोनों शिष्यों की पीठ पर प्रहार न करके प्रत्यक्ष प्रहार किया था। यहाँ प्रो० सिन्हा रामदास का शोषण जमकर करते हैं, वह भी रामदास को बताए बिना। क्या यह आजादी के बाद मूल्यात्मक शिक्षा का उज्जवल पहलू कहा जा सकता है ? इन्हीं प्रक्रियाओं के चलते आज समाज में शिक्षा और शिक्षक दोनों का मूल्यात्मक ह्रास हो रहा है। समाज में उदीयमान उत्तम किन्तु निर्धन छात्रों का शोषण प्रो० सिन्हा जैसे लोगों के द्वारा बराबर देखा जा सकता है। समाज की इसी शिक्षा-व्यवस्था की चिन्ता को लेखक श्रीलाल शुक्ल ने रामदास के माध्यम से उभारा है। जिस निर्दयता का परिचय प्रो० सिन्हा देते हैं वह प्रजातंत्रात्मक सत्ता के लिए घातक है। प्रतिभाशाली रामदास सूनी घाटी का सूरज हो जाने के लिए विवश है। वर्तमान में भी ये स्थितियाँ स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। लेखक द्वारा इन विसंगतियों का जो चित्रण किया गया है वह उनकी दूर दृष्टि का परिणाम है। प्रो० सिन्हा और ठाकुर राजेश्वर सिंह की नियत का पता रामदास को देर से सही किन्तु चल ही जाता है। दोनों अपने-अपने स्तर पर अपने-अपने ढंग से रामदास का शोषण करना चाहते हैं। अपने-अपने क्षेत्र में दोनों का रुतबा और दबदबा है। प्रजातांत्रिक मूल्यों की बातें तो लोग खूब करते हैं लेकिन लोकतंत्र अपने आप में कितना खोखला और पाखण्डपूर्ण है, इसे इस उपन्यास में देखा जा सकता है।

ठेकेदार सोबरन सिंह- मजदूरों का शोषण तथा उस पर जुल्म करता है। वह मजदूरों के सामने सरासर झूठ बोलता है। वह मजदूरों को यह बताता है कि नहर की खुदाई का काम है, लेकिन मजदूरों को वहाँ जाने पर पता चलता है कि काम तो बारूद से चट्टाने उड़ाने का है। मज़दूरों ने ऐसा जोखिम भरा कार्य जीवन मेंपहले कभी नहीं किया था। ठेकेदार सोबरन सिंह की पुलिस के साथ भी साँठ-गाँठ है। वह पुलिस का सहारा लेकर मजदूरों को डरा-धमकाकर काम करने पर विवश करता है। मजदूर ठेकेदार सोबरन सिंह की चंगुल से छूटना चाहते है। वह एक दिन भागने की कोशिश करते हैं, पर पकड़े जाते है। ठेकेदार सोबरन सिंह के आदमी मजदूरों पर अनेक प्रकार के अमानवीय अत्याचार करते हैं। यह मजदूरों को पूरी मजदूरी भी नहीं देता। मजदूर विवश होकर जो कुछ भी मिलता है स्वीकार कर चले जाते हैं। लेखक श्रीलाल शुक्ल ने सोबरन सिंह के चरित्र के द्वारा मजदूर जीवन की विवशता, उनका शोषण और ठेकेदारों का जुल्म आदि पर प्रकाश डाला है।

सत्या- एक पवित्र आस्था की तरह रामदास की समूची यात्रा में उसके साथ है। इस उपन्यास में सत्या और रामदास का साथ परिचय प्रकरण, को आरंभ में दिया गया है. वही से होता है। सत्या अपने पिता की एकलौती संतान है। उनके पिताजी इन्जीनियर है। घर में सिर्फ दो ही व्यक्ति है पिता-पुत्री। लखनऊ विश्वविद्यालय में सत्या का परिचय रामदास से होता है। वह रामदास के प्रति अधिक सहानुभूति रखती है। वह रामदास के लिए हमेशा प्रेरणादायी सिद्ध होती है। सत्या रामदास को जीवन के विभिन्न संकटों से उबारती है और जीवन के कटु सत्य का उसे परिचय करवाती है। वह टूटे हुए रामदास में आत्मबल का संचार करती है तथा जीवन के निराश क्षणों में उसे हौसला भी देती है। जब रामदास पूरी तरह टूट जाता है, अपने आपको अकेला महसूस करता है, तब सत्या ही सबसे पहले उसका सम्बल बनती है। वह रामदास को आश्वासन देती हुई कहती है- "और, देखो

रामदास, तुम अकेले नहीं हो। यह शताब्दी ही नवयुवकों पर आघात करती है। न जाने कितने आहत, अपंग विद्यार्थी इसी यूनिवर्सिटी में मिल जाएँगे। वे सब एक-दूसरे की भाषा समझते हैं. एक-दूसरे के अतीत से और भविष्य से परिचित हैं। केवल एक-दूसरे का नाम नहीं जानते हैं। पर एक बार जान लेने पर भूलते नहीं। उन सबकी चेष्टाओं को तुम कैसे ठुकरा सकते हो।"
सत्या रामदास के दुःख का बंटवारा करना चाहती है। वह रामदास के दुःख को अपना दुःख मानती हुई कहती है- "और मैं भी तुम्हारे लिए इतनी अपरिचित नहीं हूँ। कुछ समझकर ही तुमने मुझसे अपनी बातें बताई हैं। मेरी शक्तियाँ बहुत कम हैं। कुछ और न कर सकूँ। फिर भी तुम्हारी कठिनाइयों के बारे में तुम्हारे साथ सोच तो सकती हूँ। उसमें भी तुम्हे आपत्ति होगी।""

इस प्रकार सत्या रामदास की शुभचिंतक है, उससे सहानुभूति रखती है. उसमें रुचि लेती है क्योंकि वह उसकी पहले से कायल है। बेबी के चरित्र के माध्यम से श्रीलाल शुक्ल ने नवयुवकों की यौन समस्या का चित्रण किया है। बेबी ठाकुर राजेश्वर सिंह की 17-18 साल की बेटी है। बेबी वासनात्मक कुण्ठा का शिकार है। वह अपने ड्राइवर फिलिप के साथ माँसल औररोमानी प्रेम की दुनिया में भटकती रहती है और अंत में उसी के साथ घर से भाग जाती है। इस प्रकार सुख की तलाश में भटकती बेबी यौन कुण्ठा का शिकार हो वैयक्तिक स्तर पर टूटती-बिखरती रहती है।

यूनिट-4

विराम चिह्न क्या है -

हिंदी में विराम चिह्न क्या है ? व इसका प्रयोग कब और कहाँ किया जाता है, इसके बारे में उदाहरणों के माध्यम से जानेंगे।
विराम चिह्न किसे कहते हैं
जैसा कि विराम का अर्थ रुकना होता है, उसी प्रकार हिंदी व्याकरण में विराम शब्द का अर्थ है - ठहराव या रुक जाना। एक व्यक्ति अपनी बात कहने के लिए, उसे समझाने के लिए, किसी कथन पर बल देने के लिए, आश्चर्य आदि भावों की अभिव्यक्ति के लिए कहीं कम, कहीं अधिक समय के लिए ठहरता है। भाषा के लिखित रूप में कुछ समय ठहरने के स्थान पर जो निश्चित संकेत चिह्न लगाये जाते है, उन्हें विराम-चिह्न(Viram chinh) कहते है।

वाक्य में विराम-चिह्नों के प्रयोग से भाषा में स्पष्टता और सुन्दरता आ जाती है तथा भाव समझने में भी आसानी होती है। यदि विराम-चिह्नों का यथा स्थान उचित प्रयोग न किया जाये तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। उदाहरण--रोको, मत जाने दो।रोको मत, जाने दो।
इस प्रकार विराम-चिह्नों से अर्थ एवं भाव में परिवर्तन हो जाता है। इनका ध्यान रखना आवश्यक है।

विराम चिन्ह - Viram chinh
नाम विराम चिह्न

अल्प विराम (,)
अर्द्ध विराम (;)
पूर्ण विराम (।)
प्रश्नवाचक चिह्न (?)
विस्मयसूचक चिह्न (!)
अवतरण या उद्धरण चिह्न इकहरा – (‘ ’),दुहरा – (“ ”)
योजक चिह्न (-)
कोष्ठक चिह्न ( ) { } [ ]
विवरण चिह्न (:-)
लोप चिह्न (.....)
विस्मरण चिह्न (^)
संक्षेप चिह्न (.)
निर्देश चिह्न (-)
तुल्यतासूचक चिह्न (=)
संकेत चिह्न (*)
समाप्ति सूचक चिह्न (- : -)
विराम-चिह्नों का प्रयोग-
1. अल्प विराम किसे कहते है - Alpviram in Hindi ?

अल्पविराम

अल्पविराम-अल्प विराम का अर्थ है, थोड़ी देर रुकना या ठहरना। अंग्रेजी में इसे हम ‘कोमा’ कह कर पुकारते है।

(1) वाक्य में जब दो या दो से अधिक समान पदों पदांशो अथवा वाक्यों में संयोजक अव्यय ‘और’ की संभावना हो, वहाँ अल्प विराम का प्रयोग होता है। उदाहरण--

पदों में–पंकज, लक्ष्मण, राजेश और मोहन ने विद्यालय में प्रवेश किया।

वाक्यों में–मोहन रोज खेल के मैदान में जाता है, खेलता है और वापस अपने घर चला जाता है।

वह काम करता है, क्योंकि वह गरीब है।

आज मैं बहुत थका हूँ, इसलिए जल्दी घर जाऊँगा।

यहाँ अल्प विराम द्वारा अलगाव को दिखाया गया है।

(2) जहाँ शब्दों की पुनरावृत्ति की जाए और भावों की अधिकता के कारण उन पर अधिक बल दिया जाए। उदाहरण--सुनो, सुनो, वह नाच रही है।

(3) जब कई शब्द जोड़े से आते है, तब प्रत्येक जोड़े के बाद अल्प विराम लगता है। उदाहरण--

सुख और दुःख, रोना और हँसना,

(4) क्रिया विशेषण वाक्यांशों के साथ, उदाहरण--

वास्तव में यह बात, यदि सच पूछो तो, मैं भूल ही गया था।

(5) संज्ञा वाक्य के अलावा, मिश्र वाक्य के शेष बड़े उपवाक्यों के बीच में। उदाहरण--
यह वही पैन है, जिसकी मुझे आवश्यकता है।
चिंता चाहे जैसी भी हो, मनुष्य को जला देती है।
(6) वाक्य के भीतर एक ही प्रकार के शब्दों को अलग करने में। उदाहरण--
मोहन ने सेब, जामुन, केले आदि खरीदे।
(7) उद्धरण चिह्नों के पहले, उदाहरण--
वह बोला, "मैं तुम्हें नहीं जानता।"
(8) समय सूचक शब्दों को अलग करने में। उदाहरण--
कल शुक्रवार, दिनांक 18 मार्च से परीक्षाएँ प्रारम्भ होंगी।
(9) पत्र में अभिवादन, समापन के साथ। उदाहरण--
पूज्य पिताजी,भवदीय,मान्यवर ,

2.अर्द्ध विराम चिह्न किसे कहते है ? Ardh Viram Chinh

अर्द्ध विराम का प्रयोग प्रायः विकल्पात्मक रूप में ही होता है। अंग्रेजी में इसे 'सेमी कॉलन' कहते है।

(1) जब अल्प विराम से अधिक तथा पूर्ण विराम से कम ठहरना पड़े तो अर्द्ध विराम(;) का प्रयोग होता है। उदाहरण--बिजली चमकी ; फिर भी वर्षा नहीं हुई एम. ए. ; एम. एड. शिक्षक ने मुझसे कहा; तुम पढ़ते नहीं हो। शिक्षा के क्षेत्र में छात्राएँ बढ़ती गई; छात्र पिछड़ते गए।

(2) एक प्रधान पर आश्रित अनेक उपवाक्यों के बीच में। उदाहरण--जब तक हम गरीब है; बलहीन है; दूसरे पर आश्रित है; तब तक हमारा कुछ नहीं हो सकता।जैसे ही सूर्योदय हुआ; अँधेरा दूर हुआ; पक्षी चहचहाने लगे और मैं प्रातः भ्रमण को चल पड़ा।

3.पूर्ण विराम (।) - Purn Viram

पूर्ण विराम का अर्थ है पूरी तरह से विराम लेना, अर्थात् जब वाक्य पूर्णतः अपना अर्थ स्पष्ट कर देता है तो पूर्ण विराम का प्रयोग होता है अर्थात जिस चिह्न के प्रयोग करने से वाक्य के पूर्ण हो जाने का ज्ञान होता है, उसे पूर्ण विराम कहते है। हिन्दी में इसका प्रयोग सबसे अधिक होता है। पूर्ण विराम (Purn Viram) का प्रयोग नीचे उदाहरणों में देखें -

(1) साधारण, मिश्र या संयुक्त वाक्य की समाप्ति पर। उदाहरण-- अजगर करे ना चाकर, पंछी करें ना काम।दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।पंछी डाल पर चहचहा रहे थे।

(2) प्रायः शीर्षक के अन्त में भी पूर्ण विराम का प्रयोग होता है। उदाहरण-- नारी और वर्तमान भारतीय समाज।

(3) अप्रत्यक्ष प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में पूर्ण विराम लगाया जाता है। उदाहरण--
उसने मुझे बताया नहीं कि वह कहाँ जा रहा है।

4.प्रश्नवाचक चिह्न (?)

प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग प्रश्न सूचक वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम के स्थान पर किया जाता है। इसका प्रयोग निम्न स्थिति में किया जाता है- क्या बोले, वे चोर है ?क्या वे घर पर नहीं हैं ?

5.विस्मयादिबोधक चिह्न (!)

जब वाक्य में हर्ष, विषाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करुणा, भय आदि भाव व्यक्त किए जाएँ तो वहाँ इस विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा आदर सूचक शब्दों, पदों और वाक्यों के अन्त में भी इसका प्रयोग किया जाता है। उदाहरण--

(1) हर्ष सूचक- तुम्हारा कल्याण हो !हे भगवान! अब तो तुम्हारा ही आसरा है।हाय! अब क्या होगा। छिः! छिः! कितनी गंदगी है।शाबाश! तुमने गाँव का नाम रोशन कर दिया।

(2) करुणा सूचक- हे प्रभु! मेरी रक्षा करो

(3) घृणा सूचक-इस दुष्ट पर धिक्कार है!

(4) विषाद सूचक- हाय राम! यह क्या हो गया।

(5) विस्मय सूचक-सुनो! मोहन पास हो गया।

6.उद्धरण या अवतरण चिह्न - Avtaran Chinh

जब किसी कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाता है तो उस कथन के दोनों ओर इसका प्रयोग किया जाता है, इसलिए इसे अवतरण चिह्न या उद्धरण चिह्न कहते है। इस चिह्न के दो रूप होते है-

(i) इकहरा उद्धरण (‘ ’)-

जब किसी कवि का उपनाम, पुस्तक का नाम, पत्र-पत्रिका का नाम, लेख या कविता का शीर्षक आदि का उल्लेख करना हो तो इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है। उदाहरण-- रामधारीसिंह ‘दिनकर’ ओज के कवि है।सूर्यकांत त्रिपाठी ’निराला’

तुलसीदास ने कहा- ’’सिया राममय सब जग जानी, करऊं प्रणाम जोरि जुग पानि।’’

(ii) दुहरा उद्धरण (“ ”)-जब किसी व्यक्ति या विद्वान तथा पुस्तक के अवतरण या वाक्य को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाए, तो वहाँ दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण--“स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।”–तिलक।

“तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।”–सुभाषचन्द्र बोस।

7.योजक चिह्न (-) - Yojak Chinh

इसे समास चिह्न भी कहते है।अंग्रेजी में प्रयुक्त हाइफन (-) को हिन्दी में योजक चिह्न कहते है। हिन्दी में अधिकतर इस चिह्न (-) के स्थान पर डेश (-) का प्रयोग प्रचलित है। यह चिह्न सामान्यतः दो पदों को जोड़ता है और दोनों को मिलाकर एक समस्त पद बनाता है लेकिन दोनों का स्वतंत्र अस्तित्व बना रहता है। कमल-से पैर। कली-सी कोमलता। कभी-कभी , खेलते-खेलते

(1) दो शब्दों को जोड़ने के लिए तथा द्वन्द्व एवं तत्पुरुष समास में। उदाहरण--सुख-दुःख, माता-पिता,।

(2) पुनरुक्त शब्दों के बीच में। उदाहरण--धीरे-धीरे, घर -घर, रोज -रोज।

(3) तुलना वाचक सा, सी, से के पहले लगता है। उदाहरण--भरत-सा भाई, सीता-सी माता।
(4) शब्दों में लिखी जाने वाली संख्याओं के बीच। उदाहरण--एक-चौथाई

8.कोष्ठक चिह्न ( )

किसी की बात को और स्पष्ट करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। कोष्ठक में लिखा गया शब्द प्रायः विशेषण होता है।इस चिह्न का प्रयोग-
(1) वाक्य में प्रयुक्त किसी पद का अर्थ स्पष्ट करने हेतु। उदाहरण--
आपकी ताकत (शक्ति) को मैं जानता हूँ।
आवेदन-पत्र जमा कराने की तिथि में सात दिन की छूट (Relax) दी गई है।
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (भारत के प्रथम राष्ट्रपति) बेहद सादगी पसन्द थे।
(2) नाटक या एकांकी में पात्र के अभिनय के भावों को प्रकट करने के लिए। उदाहरण--
राम - (हँसते हुए) अच्छा जाइए।

9.विवरण चिह्न (:-) - Vivaran Chinh

किसी कही हुई बात को स्पष्ट करने के लिए या उसका विवरण प्रस्तुत करने के लिए वाक्य के अंत में इसका प्रयोग होता है। इसे अंग्रेजी में 'कॉलन एंड डेश' कहते है। उदाहरण--
सर्वनाम छः प्रकार के होते हैः- पुरुषवाचक, निजवाचक, सम्बन्धवाचक, निश्चितवाचक, अनिश्चितवाचक, प्रश्नवाचक।
वेद चार हैः- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद।
पुरुषार्थ चार है:- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

10.लोप सूचक चिह्न (....)जहाँ किसी वाक्य या कथन का कुछ अंश छोड़ दिया जाता है, वहाँ लोप सूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण--तुम मान जाओ वरना.....।
मैं तो परिणाम भोग रहा हूँ, कहीं आप भी.....।

11.विस्मरण चिह्न (^)

इसे हंस पद या त्रुटिपूरक चिह्न भी कहते है। जब किसी वाक्य या वाक्यांश में कोई शब्द लिखने से छूट जाये तो छूटे हुए शब्द के स्थान के नीचे इस चिह्न का प्रयोग कर छूटे हुए शब्द या अक्षर को ऊपर लिख देते है। उदाहरण--मेरा भारत ^ देश है। मुझे आपसे ^ परामर्श लेना है।

12.संक्षेप चिह्न या लाघव चिह्न (०)

किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने हेतु उस शब्द का प्रथम अक्षर लिखकर उसके आगे यह चिह्न लगा देते है। प्रसिद्धि के कारण लाघव चिह्न होते हुए भी वह पूर्ण शब्द पढ़ लिया जाता है। उदाहरण--राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय - रा०उ०मा०वि०।भारतीय जनता पार्टी = भा० ज० पा०। मास्टर ऑफ आर्ट्स = एम० ए०।प्राध्यापक - प्रा०।डॉक्टर - डॉ०।पंडित - पं०।

13.निर्देशक चिह्न (-)यह चिह्न योजक चिह्न (-) से बड़ा होता है। इस चिह्न के दो रूप है- 1. (-) 2. (–)। अंग्रेजी में इसे 'डैश' कहते है। महाराज- द्वारपाल! जाओ।द्वारपाल- जो आज्ञा स्वामी! आँगन में ज्योत्सना-चाँदनी-छिटकी हुई थी।

14.तुल्यतासूचक चिह्न (=)समानता या बराबरी बताने के लिए या मूल्य अथवा अर्थ का ज्ञान कराने के लिए तुल्यतासूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण–1 लीटर = 1000 मिलीलीटर ।वायु = समीर

15.संकेत चिह्न (⁎)

जब कोई महत्त्वपूर्ण बातें बतानी हो तो उसके पहले संकेत चिह्न लगा देते है। उदाहरण– स्वास्थ्य सम्बन्धी निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए-प्रातःकाल उठना चाहिए।भ्रमण के लिए जाना चाहिए।

16.समाप्ति सूचक चिह्न या इतिश्री चिह्न (-०-)-

किसी अध्याय या ग्रन्थ की समाप्ति पर इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। यह चिह्न कई रूपों में प्रयोग किया जाता है। उदाहरण–(- :: -), (–x–x–)

विराम चिह्न के महत्वपूर्ण प्रश्न-Viram Chinh ke Question Answer

1. किस क्रमांक के वाक्य में सही विराम चिह्न लगा है?

(अ) जो परिश्रमी होते हैं, वहीं सफलता प्राप्त कर सके हैं।✔

(ब) पानी हमारा जीवन हैः हवा प्राण है, और अन्न हमारी शक्ति है।

(स) मित्रों! आज मैं आ रहा हूँ।

(द) हाँ! मैं यह काम अवश्य करूँगा।

2. किस वाक्य में वाक्यगत सही विराम चिह्न नहीं है?

(अ) हाँ, मैं यह काम अवश्य करूँगा

(ब) वह हाथ जोड़ती रही, ससुराल वाले उसे पीटते रहे।

(स) रामचरितमानस एक धार्मिक ग्रन्थ है।✔

(द) काश! वह जिंदा होता।

3. उद्धरण चिह्न का प्रयोग कब होता है?

(अ) क्रम संख्या दर्शाने के लिए

(ब) वाक्य की त्रुटि दूर करने के लिए

(स) किसी की बात को ज्यों का त्यों लिखने के लिए ✔

(द) वाक्य में विषय की सूचना देने के लिए

4. किस क्रम में विराम चिह्न का सही प्रयोग नहीं हुआ है?

(अ) जब मेरा मित्र आया, मैं सो रहा था।

(ब) अध्यक्ष महोदय, हमारी बात सुनिए? ✔

(स) क्या कोई तारे गिन सकता है?

(द) मद्यपान शरीर और आत्मा का नाश करता है।

5. किस क्रमांक के वाक्य में सही विराम-चिह्न लगा है?

(अ) राम! तुम अब सो जाओ।✔

(ब) वाह, आप खूब है।

(स) श्याम! तुम आ गए?

(द) अध्यक्ष जी, हमारी बात सुनिये?

6. (λ) कोष्ठक में दिया गया चिह्न किसका है?

(अ) योजक चिह्न

(ब) लाघव चिह्न

(स) निर्देशक चिह्न

(द) हंस पद या त्रुटिपूरक चिह्न✔

विराम चिह्न के महत्वपूर्ण प्रश्न-

7. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?

(अ) किसी पद का अर्थ स्पष्ट करने के लिए योजन चिह्न लगाया जाता है।✔

(ब) दूसरे की उक्ति को वैसा का वैसा उद्धृत करने के लिए उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है

(स) विस्मय, हर्ष, घृणा, शोक आदि भावों को प्रकट करने के लिए विस्मयादिबोधक चिह्न लगाया जाता है

(द) जहाँ वाक्य पूरा होता है, वहाँ पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है?

8. किस वाक्य में विराम चिह्न का गलत प्रयोग हुआ है?

(अ) बुद्ध ने घर-घर जाकर उपदेश दिया।

(ब) उसके पास कपडा-लत्ता कुछ है भी या नहीं?

(स) विराम चिह्नों का प्रयोग सही नहीं हुआ है?✔

(द) पिता-पुत्र में झगडा हो गया है।

9. (0) कोष्ठक में दिया गया चिह्न किसको इंगित करता है?

(अ) विवरण (ब) लाघव✔

(स) योजक (द) लोप निर्देशक

10. किसी के कथन को उद्धृत करते समय किस विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है?

(अ) विस्मयवाचक चिह्न

(ब) अवतरण या उद्धरण चिह्न✔

(स) प्रश्नवाचक चिह्न

(द) निर्देशक चिह्न

11. (.....) कोष्ठक में दिए गए चिह्न का कब उपयोग किया जाता है?

(अ) वाक्य में छोडे गये स्थान पर।✔

(ब) दूसरे की उक्ति को उद्धृत करने के लिए

(स) जहाँ वाक्य पूरा होता है।

(द) पढ़ते समय थोडी देर रुकने के लिए

12. सही विराम चिह्नों वाला वाक्य है?

(अ) जो पत्र आज आया है, कहाँ है?✔
(ब) जो पत्र आज आया है, कहाँ हैं?
(स) जो पत्र आज आया है, कहाँ है.
(द) जो पत्र, आज आया है, कहाँ है.
13. किस क्रम में विराम चिह्न का ठीक प्रयोग नहीं हुआ है?
(अ) जी हाँ, मैं भी आपके साथ चलूँगा।
(ब) कम्प्यूटर: आज के युग की अनिवार्यता
(स) सैनिक- (प्रमाण करते हुए) महाराज की जय हो
(द) वाह, आपने तो कमाल कर दिया?✔
14. सही विराम चिह्नों वाला वाक्य कौन-सा है?
(अ) छिः तुमने तो, नाम ही डुबो दिया?
(ब) छिः तुमने! तो नाम ही डुबो दिया।
(स) छिः ! तुमने तो नाम ही डुबो दिया।✔
(द) छिः तुमने तो नाम ही, डुबो दिया.
विराम चिह्न के महत्वपूर्ण प्रश्न-
15. (" ") कोष्ठक में निर्धारित चिह्न किसकी इंगित करता है?
(अ) योजक चिह्न (ब) उद्धरण चिह्न✔
(स) निर्देशक चिह्न (द) लाघव चिह्न
16. (;) विराम चिह्न का नाम है?
(अ) अर्द्धविराम✔ (ब) पूर्ण विराम
(स) अल्पविराम (द) हंस पद
17. अर्द्धविराम (;) के प्रयोग के सम्बन्ध में कौन-सा कथन असत्य है?
(अ) अर्द्ध विराम समानाधिकृत वाक्यों के बीच प्रयुक्त होता है।
(ब) अर्द्धविराम मिश्र तथा संयुक्त वाक्यों में विपरीत अर्थ प्रकट करने वाले उपवाक्यों के बीच प्रयुक्त होता है।
(स) शब्द-युग्मों को एक-दूसरे से अलग करने के लिए अर्द्धविराम प्रयुक्त होता हैं।✔
(द) अर्द्ध विराम का प्रयोग किसी वाक्य में उदाहरण सूचक शब्द के पहले होता है।
18. किसी कठिन शब्द को स्पष्ट करने के लिए किस विराम चिह्न का प्रयोग होता है?
(अ) विवरण चिह्न (ब) निर्देशक
(स) कोष्ठक✔ (द) अल्पविराम
19. द्वन्द्व समास के दोनों पदों के बीच किस चिह्न का प्रयोग होता है?
(अ) विराम चिह्न (ब) योजक चिह्न✔
(स) अर्द्धविराम (द) अल्पविराम
20. योजक चिह्न है?

(अ) - ✓ (ब) ।

(स) : (द) ;

21. किस क्रमांक के वाक्य में सही विराम चिह्न लगा है?

(अ) जब मेरा मित्र आया! मैं सो रहा था!

(ब) श्याम! तुम आ गये! ✓(स) नहीं! यह नहीं हो सकता

(द) राम, श्याम, मोहन खेल रहे हैं।

22. लाघव चिह्न का प्रयोग होता है?

(अ) उद्धरण के लिए

(ब) बडे अंश का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए ✓

(स) त्रुटि सुधार के लिए

(द) अभिवादन के लिए

डॉ.जशाभाई पटेल